



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

‘संवाद’

षष्ठं अंक

महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवसंरचना), का कार्यालय
नई दिल्ली



तृतीय तल ‘ए’ स्कंध, इंद्रप्रस्थ भवन, इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली -

110002

हिंदी दिवस-2024
चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
राजभाषा हीरक जयंती वर्ष
भारत मंडपम, नई दिल्ली
14 व 15 सितंबर 2024



सरस्वती वंदना

वर दे, वीणावादिनि वर दे,
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

काट अंध-उर के बंधन-स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे,

वर दे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृंद को,
नव पर, नव स्वर दे,

वर दे, वीणावादिनि वर दे,
वर दे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

संवाद समिति



श्रीमती विनीता मिश्रा
महानिदेशक, लेखापरीक्षा (अवसंरचना)



श्री अजय कुमार कृपाशंकर
निदेशक (प्रशासन)



श्री राकेश कुमार, व.ले.प.अ. (प्रशासन)



सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी



डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक



सुश्री अहू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक



सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

संवाद पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्रीमती विनीता मिश्रा

महानिदेशक

संरक्षक

श्री अजय कुमार कृपाशंकर

निदेशक (प्रशासन)

(संपादकीय समिति)

श्री राकेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी

डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

(टंकण कार्य)

सुश्री अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

(डिज़ाइनिंग)

डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक

-:अस्वीकरण:-

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे मुख्य संरक्षक, संरक्षक तथा संपादक मंडल आदि का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

हिंदी दिवस समारोह 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

महानिदेशक महोदय का संदेश

निदेशक महोदय की कलम से

संपादकीय

क्र. सं.	विषय	रचना	रचनाकार/संकलनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पृष्ठ सं.
1	मेरा 15 अक्टूबर 2023 का यादगार ट्रांजिट डे.....	लेख	मनोज मधुकर कस्तूर वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	01
2	साया	कविता	सुप्रिया सिंह कनिष्ठ अनुवादक	06
3	हिंदी की महिमा	कविता	डॉ. अनुराधा जोशी कनिष्ठ अनुवादक	07
4	पिता	लेख	आशीष कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	08
5	स्व-भाव मंजरी	कविता	अनू बाजपेयी कनिष्ठ अनुवादक	10
6	एक यात्रा ऐसी भी	यात्रा वृत्तांत	मोहित तोमर सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	11
7	रूप रंग की उलझन	कविता	नवीन लेखापरीक्षक	16
8	दर्शन हों तो ऐसे....	यात्रा वृत्तांत	मनोज मधुकर कस्तूर वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	17
9	कहाँ खो गया हूँ	कविता	पुष्पेन्द्र सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20
10	प्रसन्नता: एक खोज	कहानी	अमित कुमार लेखापरीक्षक	21
11	बच्चे होते भगवान का रूप	कविता	श्री राजेश कुमार सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	26

12.	करुणा	लेख	मेघा कौशिक वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	27
13.	सबसे प्यारा मेरा भारत, आगे बढ़ता मेरा भारत	कविता	अमित कुमार लेखापरीक्षक	28
14.	श्री अमरनाथ जी की यात्रा	यात्रा वृत्तांत	श्री राजेश कुमार सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30
15.	वो जो सबके अन्दर रहता है	कविता	नवीन लेखापरीक्षक	34
16.	मेरी दुबई यात्रा	यात्रा वृत्तांत	गुंजन जाजोरिया सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	36
17.	नमन भारत के वीर शहीदों को	कविता	मनोज वत्स लेखापरीक्षक	40
18.	हर इंसान खूबसूरत होता है.....	कविता	मनोज मधुकर कस्तूर वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	42

कार्यालयीन गतिविधियाँ

पृष्ठ संख्या

1. भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2024 की कुछ झलकियाँ 43
2. हिंदी पत्रिका संवाद के 'पंचम' अंक के लिए आपके पत्र 45
3. कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला से संबंधित छायाचित्र 48
4. कार्यालय के मनोरंजन क्लब की ओर से आयोजित मोजोलैंड एवं लोहागढ़ फार्म्स दौरों की झलकियाँ 50
5. कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित ऋषिकेश दौरे की झलकियाँ 51
6. नव वर्ष 2024 के आयोजन की तस्वीरें 52
7. महिला दिवस 2024 के आयोजन की तस्वीरें 53
8. कार्यालय द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताओं की झलकियाँ 54
9. योग-दिवस 2024 के अवसर पर आयोजित योग-सत्र की कुछ तस्वीरें 56

“

में उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं
और जिनका विचार है कि हिंदी ही
भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है

—बाल गंगाधर तिलक



अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

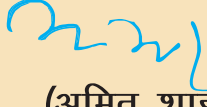
राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)



महानिदेशक महोदया का संदेश



मुझे यह कहते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के षष्ठ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी के प्रसार, प्रयोग और प्रोत्साहन हेतु अपना योगदान देती इस हिंदी पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादकीय समिति के सभी सदस्यों को उनके कार्य एवं प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह एवं लगाव को प्रोत्साहित करना है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के लिए किए गए प्रयास आशापूर्ण परिणाम लायेंगे। यह भी आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रसार एवं प्रयोग में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

पत्रिका की सफलता हेतु शुभकामनाएं !

विनीता मिश्रा

(विनीता मिश्रा)
महानिदेशक



निदेशक (प्रशासन) महोदय की कलम से



मैं कार्यालय की हिंदी पत्रिका के षष्ठ अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपार हर्ष महसूस कर रहा हूँ। यह पत्रिका रचनाकारों के लेखन कौशल एवं क्षमता को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम है, रचनाकारों ने अपनी प्रतिभा को उद्घाटित किया है। कार्यालय के कर्मठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों का समुचित पालन किया जा रहा है।

इस हिंदी पत्रिका में रचनाकारों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया है। मैं पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक समिति व रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति इस निष्ठा के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

(अजय कुमार कृपाशंकर)
निदेशक (प्रशासन)



राकेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

संपादकीय

यह अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है कि महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'संवाद' का षष्ठ अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विगत पाँच अंकों के प्रकाशन से हमें यह अनुभव हुआ है कि इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में प्रभावशाली लेखन प्रतिभा विद्यमान है। रचनाकारों की मौलिकता उनकी रचनाओं में झलकती है एवं प्रत्येक रचनाकार अपने आप में एक पहचान है। ऐसा भी संज्ञान में आया है कि जैसे-जैसे हिंदी भाषा के उपयोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो रही है, वैसे-वैसे लेखकों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है, जो राजभाषा नीति के अनुपालन में सहायक होगी।

'संवाद' ई-पत्रिका के माध्यम से महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) कार्यालय में कार्यरत कर्मियों को अपने विचार प्रकट करने एवं उनके आदान-प्रदान करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे अन्य पाठक भी न केवल लाभान्वित होते हैं बल्कि उनमें हिंदी भाषा के प्रति और अधिक आकर्षण, सहजता एवं संवेदनशीलता का आभास होता है, जिससे हिंदी भाषा के उपयोग को एक नया आयाम एवं दिशा प्राप्त होती है।

हमें आशा है कि इस अंक में प्रकाशित की जा रही रचनाएँ पाठकों को पसंद आएंगी। हम सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देते हुए ई-पत्रिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करते हैं एवं सुधी पाठकों से यह अपेक्षा करते हैं कि वह हमें अपनी प्रतिक्रियाओं एवं बहुमूल्य सुझावों से अवश्य अवगत कराएँगे।

शुभकामनाओं सहित,

संपादक मंडल



मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा 15 अक्टूबर 2023 का यादगार ट्रांजिट डे

हेलो फ्रेंड्स, इस बार मैं आप सबके लिए लेकर आया हूँ मेरी 15 अक्टूबर 2023 की गंगटोक यात्रा, जिसमें मैं अपने कार्यालय के साथियों (आदित्य, देवेश और अखिल) के साथ ऑडिट पर गया था। वैसे तो हमारे व्यावसायिक पेशे में ऑडिट पर बाहर जाना बहुत ही आम बात होती है, पर उपरोक्त यात्रा के दौरान हमारे अनुभव अन्य यात्राओं से कुछ ज़्यादा ही रोचक रहे। इन्हीं दिलचस्प अनुभवों को मैं, अपने इस लेख के माध्यम से आप सबके मध्य साझा कर रहा हूँ। जिसका विषय है 'मेरा 15 अक्टूबर 2023 का यादगार ट्रांजिट डे'।

यात्रा के पूर्व निर्धारित प्लान के अनुसार 15 अक्टूबर 2023 (संडे) की सुबह, हमें एयर एशिया की 9:30 बजे की फ्लाइट से बागडोगरा, (सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल) पहुँचना था जहाँ से गंगटोक (सिक्किम) तक का बाकी सफर हमें सड़क द्वारा पूरा करना था। इत्तेफाक से 15 अक्टूबर 2023 को शारदीय नवरात्री 2023 का पहला दिन भी था, जिसको ध्यान में रखते हुए मैं रात को 11:30 बजे सो कर, सुबह 4:30 बजे भी उठ गया, फिर भी मुझे घर से निकलते-निकलते लगभग 7:20 बज गए थे और मेरा दिल ही जानता है कि उस वक्त से नई दिल्ली के टी-3 टर्मिनल की सिक्योरिटी पर 8:10 बजे और यात्री लगेज सबमिशन की लाइन में 8:20 बजे तक पहुँचने के दौरान मेरा दिल और मेरा ब्लड प्रेशर कितना ऊपर-नीचे होता रहा, जब तक की वहाँ के स्टाफ ने मुझे ये भरोसा नहीं दिलाया कि मैं आराम से अपनी फ्लाइट पकड़ लूँगा। मेरा पूरा शरीर काँप रहा था। इतने पवित्र दिन पर भी ऐसा क्या हुआ था, जिससे मेरे इतने पसीने छूटने लगे, तो चलिए मित्रों! आपको यह भी बताते हैं।

15 अक्टूबर 2023 की सुबह, मैं 4:30 बजे उठ गया था और मुझे लगा कि मैं, 9:25 बजे की फ्लाइट के लिए आराम से 6:30-6:45 बजे तक घर से एयरपोर्ट के लिए निकल जाऊँगा। इस सोच के साथ मैं सुबह उठते ही अपनी रोजाना की दिनचर्या में लग गया और 5:30 बजे तक मैं नहा-धोकर पूजा के लिए तैयार था, ताकि पूरी नवरात्री बाहर रहने के कारण कम से कम उस सुबह तो माँ शैलपुत्री की पूजा-अर्चना हो सके, परन्तु परिस्थिति/प्राथमिकता अनुसार अपनी कार्य गति को स्पीडअप नहीं कर पाया। जिस कारण घड़ी में लगभग 7 बज चुके थे और मुझे एयरपोर्ट निकलने के लिए अभी तैयार भी होना था।

बहुत तेजी करते हुए भी मुझे घर से निकलते- निकलते 7.20 बज गए और अब मेरा मन एयरपोर्ट पहुँचने के समय को लेकर थोड़ा-थोड़ा नर्वस होने लगा था। मुझे अपनी सोसाइटी के गेट पर कोई कैब वाला भी नहीं मिला। लगभग 5 मिनट के इंतज़ार पश्चात कैब वाले भाई के साथ हम एयरपोर्ट के लिए निकल पड़े। अब तक मेरा मन घड़ी को देख-देख कर बहुत भारी हुए जा रहा था, पर अपने भारी मन पर ज़्यादा ध्यान न देते हुए मैंने, कैब वाले भाई से गाड़ी की स्पीड थोड़ी बढ़ाने की रिक्वेस्ट की और मेरी ख़राब होती हालत को देख, उन्होंने कंट्रोल्ड स्पीड में तेजी से कैब दौड़ायी और उनके इस मददगार रवैये को देखते हुए, मैंने मन बनाया था कि मैं उनको ₹500 अतिरिक्त दूंगा। परन्तु उस दिन मेरा वो प्लान भी धरा रह गया और उस भाई ने भी मुझे लगभग 7:50-7:55 बजे एयरपोर्ट से 700-800 मीटर पहले वाले नजदीकी बस स्टैंड (जहाँ से एयरपोर्ट जाने के लिए शटल बसें चलती हैं) पर ड्रॉप कर दिया। जिस वजह से मेरे टिप देने का प्लान भी ऑटोमैटिक ड्रॉप हो गया, जबकि मेरा बी.पी. अपने उच्चतम स्तर पर नॉन-स्टॉप अप एंड डाउन हो रहा था।

कैब से उतरने के बाद, मैं शटल में चढ़ने के इरादे से उसके कंडक्टर के पास गया, मगर मेरे टिकिट को देख कर उन्होंने मुझे बस के चलने का वेट न कर सीधा एयरपोर्ट कैब लेकर जाने की सलाह दी, ताकि मैं टाइम से अपनी फ्लाइट ले सकूँ। मैं उस समय बहुत नर्वस था और फ्लाइट में सिर्फ 1:30 घंटे का समय बचा था जबकि मुझे एयरपोर्ट के सबसे बिजी सिक्योरिटी चेक से भी गुज़रना था, मैंने बिना कुछ सोचे शटल बस के पीछे वाले पार्किंग ग्राउंड के काउंटर से रेट पता किया। उसने कहा - “सर 695 रूपए लगेंगे”। उस वक्त मेरे पास बारगेनिंग करने का कोई विकल्प नहीं था और सिर्फ 700-800 मीटर के सफ़र के लिए मैंने ₹700 में दूसरी कैब की और लगभग 8.05 बजे के समय टी-3 टर्मिनल के सिक्योरिटी गेट पर पहुँचा। खुशकिस्मती से, मेरे द्वारा पहले से ही किये हुए वेब चेक-इन के कारण मुझे नॉर्मल सिक्योरिटी लाइन में न लग कर दूसरी साइड लगे हुए दो सिक्योरिटी काउंटेर्स पर बैठे फीमेल सिक्योरिटी स्टाफ ने मेरा वेबसाइट लॉग-इन वेरीफाई कर, सिक्योरिटी गार्ड द्वारा आईडी वेरीफाई कराके मुझे डायरेक्ट एयरपोर्ट में अन्दर जाने दिया। मैं बिना कोई वक्त गंवाए, सीधा लगेज डिपॉज़िट लाइन में लग गया और वहाँ पर तैनात स्टाफ से रूंधी हुई आवाज़ में रिक्वेस्ट की - “सर! 9.25 बजे मेरी फ्लाइट है, मैं लेट हो जाऊंगा, मुझे थोड़ा सा प्रायोरिटी पर अन्य लोगों से आगे जाने दीजिए” तो उस पर उसने कहा - “सर आपकी फ्लाइट में बहुत समय है, आप टाइम से पहुँच जाओगे।” उसकी ये बात सुन, तब कहीं जाकर मेरी साँस में साँस आयी। वरना पिछले एक घंटे में न जाने कितनी बार मेरी फ्लाइट मिस होने के नाइटमेयर ने मुझे पूरा हिलाकर रखा हुआ था, जिसे मैं वास्तविकता में पहले ही अनुभव कर चुका था, जब मेरी दिल्ली से कोलकता की फ्लाइट छूट गयी थी। थोड़ा नार्मल होने के बाद मैंने देखा कि मेरे से 10-12 लोग आगे, मेरे दो साथी अखिल और आदित्य भी लाइन में लगे हुए, अपने लगेज जमा करने का इंतज़ार कर रहे थे और मेरी तरह ही लेट हो गए थे। हमने सिक्योरिटी चेक क्रॉस किया और हम टाइम से आकर अपनी सीट्स पर बैठ गए। फ्लाइट में मैंने पाया कि मेरी सीट के साथ वाली फर्स्ट और मिडल सीट पर दो फॉरेनर्स (एक

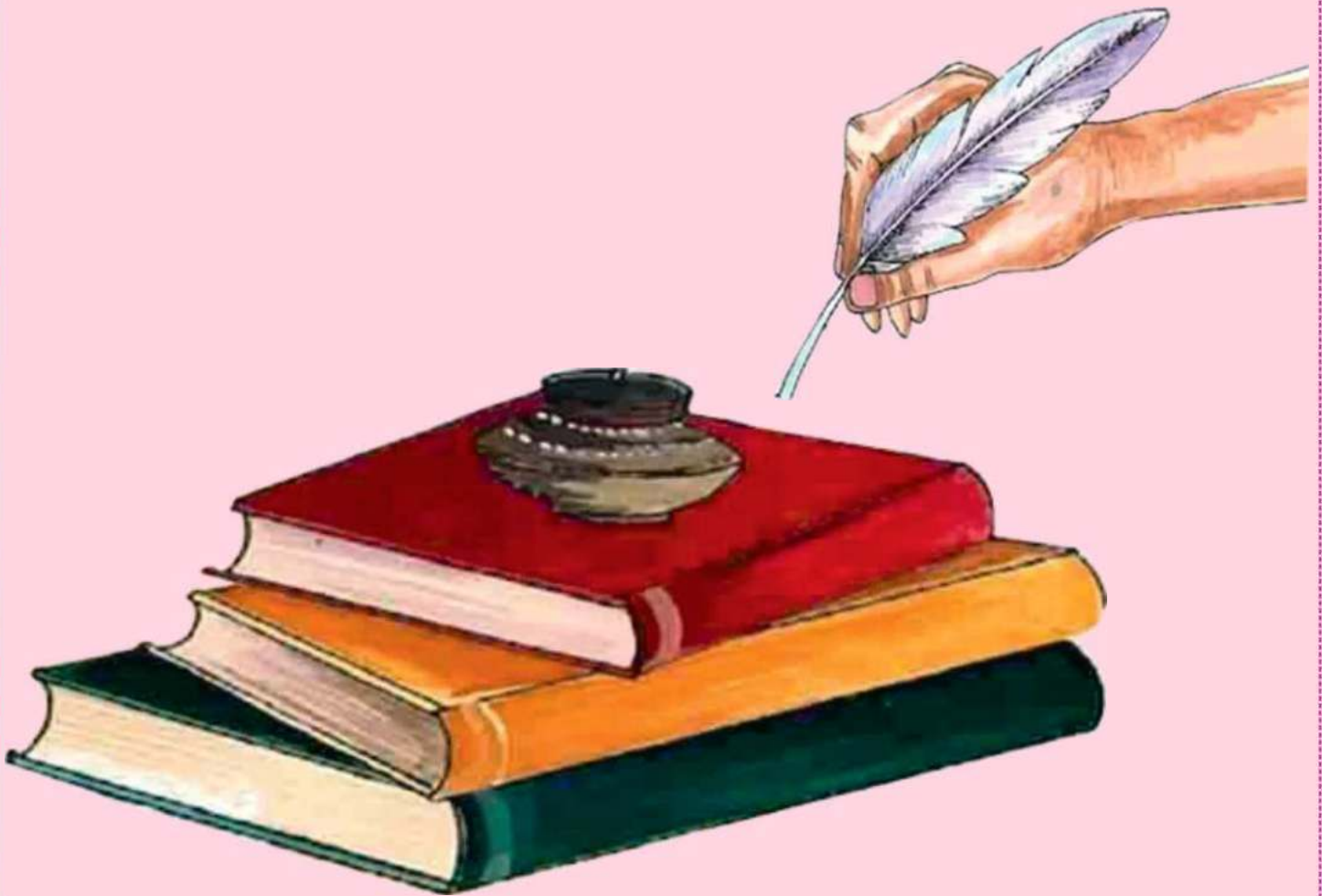
एज्ड और दूसरा यंग पर्सन) बैठे हुए थे। जब मैं वहां पहुँचा तो, उस यंग व्यक्ति ने मुझसे कहा कि उसके फादर ब्लाईंड है और पूछा कि क्या मेरी विंडो सीट हैं और क्या मैं उससे उसकी सीट से बदल सकता हूँ? फ्लाइट के दौरान वाशरूम जाने पर उन दिव्यांग व्यक्ति को होने वाली असुविधा की सोच कर, मैंने उस व्यक्ति से अपनी सीट एक्सचेंज कर ली।

उनकी आपस की बातों से मुझे लगा कि वो किसी अन्य फॉरेन लैंग्वेज में बोल रहे थे। जिसमें वह अपने पिता को मोबाइल के किसी सॉफ्टवेयर के जरिये फ्लाइट एवं अन्य चीजों के बारे में समझा रहे थे। इतनी भागम-भाग के बाद एयरपोर्ट पर समय से पहुँचने पर भी, हमारी फ्लाइट ने लगभग 30 मिनट देरी से उड़ान भरी पर उसके बावजूद, पायलट ने हमें लगभग 11:40 बजे तक बागडोगरा पहुँचा दिया था। एयरपोर्ट से बाहर आने के बाद, हमारे ड्राइवर 'रूपम' के साथ रीजनल लैंग्वेज में गाने सुनते हुए लगभग 12:30 बजे हमने पहली गाड़ी का सफर शुरू किया जो हमारे पहले फोर्स स्टॉपेज तक एकदम अच्छा रहा। रास्ते में ड्राइवर ने हमें बताया की 4 अक्टूबर 2023 को तीस्ता नदी में आयी बाढ़ की वजह से रास्ता कई जगह से टूट गया था और हमें दूसरे मार्ग द्वारा गाड़ियाँ बदलते हुए गंगटोक जाना था। यानि की लगभग 122 किलोमीटर का रास्ता जोकि सामान्य परिस्थितियों में 2:30-3 घंटे में पूरा होता, उसमें लगभग 4-5 घंटे लगने वाले थे। दूसरा कोई विकल्प न देख, हमने रास्ते पर अपना सफर जारी रखा, जहाँ दो जगह बंद रास्तों पर हमें अन्य गाड़ियाँ बदलनी थीं। जहाँ पर तीस्ता नदी की बाढ़ की वजह से किनारे की सिंगल सड़क पूरी तरह टूट चुकी थी। ऊपर से लैंड स्लाइडिंग की वजह से रास्ता बिल्कुल ब्लॉक हो रखा था और रास्ते को ठीक करने के लिए जेसीबी, लेबर और मौजूदा लोगों के साथ मिलकर निरंतर काम कर रहे थे। कोई भी गाड़ी वहां से नहीं जा सकती थी, एक जेसीबी पहाड़ को काट रही थी और दूसरी जेसीबी उन मोटे-मोटे पत्थरों को पाटने का काम कर रही थी। वहाँ हमें पैदल चलते हुए उस टूटे हुए रास्ते को क्रॉस करके अगली गाड़ी तक स्वयं पहुँचना था, जोकि वहां से लगभग 1 किलोमीटर दूर कहीं खड़ी थी, लेकिन हमें यह बताया गया कि वह सिर्फ 500-600 मीटर की दूरी पर ही है, जो वहाँ से हमें गंगटोक तक लेकर जाने वाली थी। हमने वहां मौजूद सिक्योरिटी मैनेजर से काफी रिक्वेस्ट की लेकिन उसने हमारी एक नहीं सुनी और कहा कि हमारा चलती हुई जेसीबी के पास से जाना सेफ नहीं है। अतः हमें हमारी पहली गाड़ी के पास ही वहीं रुकना पड़ा और देखते ही देखते पहले 1:00 बजा, फिर 1:30 बजे से 2:30 बज गया। इस दौरान, आदित्य ने मैनेजमेंट के लोगों के पास रेग्युलर कॉल किए और उनको हमारी स्थिति से अवगत कराया कि हम पहले पड़ाव तक पहुंच चुके हैं और अगला ड्राइवर भी हमारे लिए इंतज़ार कर रहा था। लेकिन मरम्मत कार्य के चलते हम बढ़ नहीं पा रहे थे। तभी हमें बताया गया कि सर आपको लगभग 500-700 मीटर थोड़ा सा पैदल चलना पड़ेगा, जहाँ से हम एक अन्य गाड़ी से अपना बीच का सफर कर सकते थे। हम चारों के पास लगेज ज़्यादा था और हम इतना कंफर्टेबल नहीं थे कि सामान ड्राइवर के भरोसे छोड़कर खुद रास्ते पर आगे बढ़ें, कि कब कोई दूसरा आदमी आयेगा और हमारा सामान दूसरी गाड़ी तक पहुँचाएगा? इस पर हम सबने यह मत बनाया कि

हम खुद ही अपने-अपने बैग्स हाथों में लेकर पैदल रास्ता पार करें, ताकि दूसरी गाड़ी तक जल्दी पहुँच सकें। हमने अपने सामान के साथ आगे के ऊँचे-नीचे पहाड़ी रास्ते पर पैदल चलना शुरू किया और लगभग 300 मीटर की चढ़ाई में ही हम सबकी साँसें फूल गई और जोरो की प्यास लगने लगी थी। इस दौरान फ़ोन पर संपर्क चालू था और फाइनली 3:00 बजे के आसपास वहाँ की किसी प्राइवेट गाड़ी में बैठ कर हमने अपने सेकिंड फोर्स स्टॉपेज से थोड़ा पहले तक का सफर किया। वहाँ पर भी सड़क की मरम्मत का कार्य चल रहा था। हमारे कहने पर उन्होंने हमें जल्दी वहाँ से जाने को कहा और हमने बिना समय गंवाए खुद अपना सामान हाथों में लेकर पैदल रास्ता पार किया। उस जगह से एक समान ले जाने वाली कैंपर गाड़ी में बैठ कर हम अपनी मंजिल तक जाने वाली अगली गाड़ी तक पहुँचे, जिसके बाद हम अपने आगे का सफर पूरा कर पाए। वहाँ पर टूटी हुई सड़क से दोनो तरफ गाड़ियों की लम्बी-लम्बी लाइन्स लग चुकी थी। हमारे ड्राइवर ने हमें बताया कि “साहब! आप तो बहुत जल्दी निकल गए, नहीं तो लोग यहाँ दो-दो दिन तक फँसे रहते हैं”। इस रास्ते पर पैदल सफर करते हुए हमें यह महसूस हुआ कि तीस्ता नदी में आई उस बाढ़ ने इस इलाके में कितनी तबाही मचाई थी। तीस्ता नदी के किनारे हमारे रास्ते में कोई बड़ा शहर या होटल नहीं पड़ा, जिस कारण फ्लाइट से उतरने के बाद लगभग 4:30-5:00 बजे के आसपास हमें एक छोटे से होटल पर लंच करने को मौका मिला था। इन कठिन परिस्थितियों में उन इलाकों में रहने वाले लोगों के जीवन में उपलब्ध सीमित स्रोतों के बारे में सोचकर मन को काफी पीड़ा हुई और आखिरकार रात के 7:15 बजे हम अपने होटल पहुँच गए थे।

वैसे तो हमने कई सफर किए हैं, पर इस सफर को यादगार बनाया भयंकर रूप से बहती तीस्ता नदी के स्वरूप ने, जिसके अंदर बहुत तेज बहाव के साथ पानी बह रहा था, बिल्कुल नदी के किनारे से सटी सड़क पर गुजरा हुआ हमारा अधिकतर सफर और 4 अक्टूबर 2023 को आई बाढ़ के बाद की तबाही का मंज़र। जिससे सड़क कई जगह पे बिल्कुल नीचे से खोखली हो चुकी थी, जिसकी वजह से गाड़ी का आना-जाना नहीं हो पा रहा था और पुलिस वालों द्वारा एक साइड से रोक-रोक कर अल्टरनेट बेसिस पर ट्रैफिक पास करवाया जा रहा था। जो सफर मुश्किल से 2:30-3 घंटे का बताया गया था, वह हमने लगभग 7 घंटे (12:30 बजे शुरू करके शाम को अँधेरे में 7:15 बजे) में खत्म किया, ऊपर से हमने लंच भी लगभग 4:30 बजे के आसपास शर्मा जी का ढाबा नाम के एक छोटे से वेजीटेरियन होटल पर किया, जोकि सब नॉनवेज होटलों के बीच में बना हुआ था। इस सफर में, मेरा सुबह 4:30 बजे उठ कर भी 8:00 बजे फ्लाइट के लिए भागते हुए पहुंचना, गुरुजी से प्रार्थना करना कि प्लीज, मेरी फ्लाइट ना छूटे, ज़रूरत से ज़्यादा किराया भरना, पत्थरों से भरे उबड़-खाबड़ रास्ते पर भारी सामान के साथ पैदल ट्रैकिंग करना, खतरों से भरी सड़क पर चार गाड़ियों में ट्रेवल करना, जिस पर एक तरफ भयंकर तीस्ता नदी थी, वहीं दूसरी तरफ पहाड़ मानो, गाड़ी अगर हल्की सी भी स्लिप हुई तो गए काम से, सेफ्टी बाउंड्री जैसा कुछ था ही नहीं। ऊपर से रास्ते में खाने-पीने का भी कोई इंतजाम नहीं और होटल तक पहुँचते-पहुँचते शरीर का एकदम टूट जाना। सुबह 7:20 बजे का निकला हुआ मैं शाम को 7:15 बजे होटल में घुसा था। गंगटोक

में ठंड भी बहुत थी, इसलिए मेरा सिर काफी भारी हो गया था। ऊपर से ये सोच कर कि ज़्यादा ठंड नहीं होगी और मैनेज हो जायेगा, मैं मफलर और गर्म टोपी भी साथ नहीं लाया था। पर एक सच और कहूँ तो जाते-जाते उस रात भी मुझे बहुत ठण्ड लगी, मानो जैसे सोने पे सुहागा। क्योंकि गंगटोक काफी ऊँचाई पर बसा एक खूबसूरत और बहुत अच्छा इंफ्रास्ट्रक्चर वाला शहर है। इस पूरे सफर में देवेश और अखिल मेरे नए साथी थे और उनके साथ मेरा पहला ट्रांजिट डे का सफर रोमांच से भरपूर रहा, जिसको हम सबने मिलकर पूरा किया, जो शायद ही हम में से कोई आसानी से भुला पाए। तो मित्रों कुछ ऐसा था मेरा 15 अक्टूबर 2023 का यादगार ट्रांजिट डे। आशा है कि मेरी इस यात्रा में, आपको भी थोड़ा सा थ्रिल तो अवश्य आया होगा।





सुप्रिया सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

साया

कोई कहता, साया है
साथ ये देने आया है
भूला भटका फिरता
अब मंज़िल को पाया है।

हुआ अंधेरा घट रहा है
लगता मुझ में मिल रहा है
बढ़ा अंधेरा गुम हुआ
पल में मैं गुमसुम हुआ।

साथ जो देने आया है
साथ ना ये दे पाया है।

जो कहते थे साया है
साथ ये देने आया है
बदले बदले बोल हुए है
माया है भई माया है।

फिर भोर हुई है दिन निकला है
कुछ नया नज़र सा आया है
काया है या कोई माया है।



डॉ. अनुराधा जोशी
कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी की महिमा

हिंदी को शीश नवाते हैं, हिंदी की महिमा गाते हैं
हिंदी को शीश नवाते हैं, हिंदी की महिमा गाते हैं।

हिंदी अपनी परिचायक है, हिंदी भाषायी नायक है
हम हिंदी में हैं बड़े हुए, माँ शब्द कहाया हिंदी में
हिंदी में सुख-दुःख है सारा, मानस में रमती हिंदी है
हिंदी जन-जन की बोली, सब भाषाओं की हमजोली है
हिंदी कबीर की वाणी, लेखनी सूरदास की हिंदी है
वेदों की और पुराणों की संस्कृत से उपजी हिंदी है
हिंदी साहित्य के प्राण, इन्हीं प्राणों से पोषित है हिंदी
सकल जनमानस के मन में, नदियों में गंगा है हिंदी
मन हो आनंदित हिंदी से, ऐसा सुर-ताल बढाते हैं
हिंदी को शीश नवाते हैं, हिंदी की महिमा गाते हैं।

हिंदी भारत के मस्तक पर, अमृतमय रंग सिन्दूरी है
संध्या की सुंदर बेला में, उठती गौ थापों की धूरी है
हिंदी यह सत्य, सनातन है, हिंदी पहचान हमारी है
पर फिर भी लगता है कि आज़ादी मिली अधूरी है
आज़ादी मिली अधूरी क्योंकि अंग्रेज़ी में लीन रहे
छूटा मोह न अंग्रेज़ी का, जैसे न जल बिन मीन रहे
चलो करें प्रण हिंदी का, हम सब परचम लहरायेंगे
हम नहीं निम्न होने देंगे, हिंदी को ऊँचा लायेंगे
हिंदी का सम्मान बढा, निज भाषा सतत बढाते हैं
हिंदी को शीश नवाते हैं, हिंदी की महिमा गाते हैं।



आशीष कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पिता

पिता के त्याग को समय की गवाही नहीं मिली।

माँ के हिस्से में करोड़ों पन्ने आ गए और पापा की कुर्बानियां लिखने के लिए स्याही नहीं मिली।।

‘पिता’ एक ऐसा शब्द है जिसके बारे में जितना लिखा जाना चाहिए था शायद उसका नगण्य भाग ही लिखा गया है। ऐसा कह सकते हैं कि हमारे समाज में पिता के संघर्षों और बलिदानों को नजरअंदाज किया जाता है।

‘पिता’ वह व्यक्ति होता है, जो अपने परिवार और बच्चों की खुशियों के लिए सर्वस्व न्योछावर करता है। परिवार का पूरा भार अपने कंधों पर लेकर भी मुस्कुराता है और माथे पर एक शिकन भी नहीं दिखने देता है। पिता ही वह व्यक्ति है, जो अपने बच्चों की सफलता पर निस्वार्थ भाव से सबसे अधिक प्रसन्न होता है एवं जब बच्चा असफल होता है या ऐसी कोई परिस्थिति आती है, जब दुनिया उस बच्चे को बेकार समझने लगती है तब सिर्फ पिता ही है, जो अपने बच्चों पर भरोसा दिखाकर आगे बढ़ने की हिम्मत देता है और बच्चों में आत्मविश्वास भरने का काम करता है।

पिता पर किसी शायर ने सही ही लिखा है:

मुश्किलों के कितने पर्वत पार किए,

हमारी एक कमीज सिलवाने में अपने कितने कुर्ते तार-तार किए,

हमारी जिंदें पूरी करने के लिए कितने दिन ओवरटाइम करते हुए गुजार दिए,

हमारी बचपन की एक मुस्कराहट जीतने में अपनी जवानी के कितने वर्ष हार दिए।

और वो बुखार वाली रातें, जब हमारी फिक्र में सिर्फ माँ थोड़े ही जागती थी,

कच्ची नींद में सोते तो पापा भी थे, किसी की नज़र तो नहीं लग गई, पर रोते तो पापा भी थे।

वैसे तो आजकल के बच्चे पिता के बहुत नज़दीक होते हैं, वो अपनी बातें पिता से साझा करते हैं परन्तु हमारी पीढ़ी तक के बच्चे (विशेषकर लड़के/बेटे) या कहीं तो गाँव से जुड़े अथवा निम्न-मध्यम वर्ग के अधिकांश लड़कों की पिता से एक दूरी होती है। ये बच्चे अपने पिता से प्यार तो बहुत करते हैं, परन्तु कभी भी इस बात को ज़ाहिर नहीं होने देते। यही बात लगभग हमारी पीढ़ी तक के बच्चों के पापा के साथ भी होती है, वे अपने

बच्चों को प्यार तो बहुत करते हैं, परन्तु वे कभी इसे सार्वजनिक रूप से अर्थात् बोलकर अथवा बच्चों को गले लगाकर ज़ाहिर नहीं करते।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि बचपन में पिता अपने बच्चों के लिए सुपर हीरो होते हैं। बच्चे जब थोड़े बड़े होते हैं और विद्यालय जाने लगते हैं तो उन दिनों में उनके पिता सुपर हीरो के बजाय हीरो हो जाते हैं। जब बच्चे उच्च शिक्षा हेतु विश्व-विद्यालयों में जाते हैं और उसके बाद उनकी नौकरी लगती है और कमाई शुरू होती है, उस दरम्यान बच्चों को ऐसा लगता है कि उनके पिता एक साधारण इंसान ही तो हैं और उन्हें ज़्यादा कुछ पता भी नहीं है। अपनी युवावस्था में कभी न कभी बच्चों को ज़रूर ऐसा खयाल आता है कि उनके पिता ने उनके लिए कुछ किया ही नहीं। जब बच्चों की उम्र बढ़ती है, उनकी शादी हो जाती है और वे स्वयं जब पिता बनते हैं तब उन्हें अपने पिता के संघर्षों और बलिदानों का एहसास होता है। युवावस्था के बाद जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, पिता के लिए बेटों के मन में इज्जत बढ़ती चली जाती है। हमारी पीढ़ी तक के बेटे (अथवा गाँव के बच्चे) पिता के सामने वो प्यार बयां नहीं कर पाते, जिनका उन्हें हमेशा अफ़सोस होता है परन्तु पिता तो पिता ही होते हैं और वो भी इस परिस्थिति से गुज़र चुके होते हैं, इसलिए वो अपने बच्चों के इस प्यार को बखूबी समझ जाते हैं।

हमारे समाज में अगर बेटे सफल नहीं होते हैं तो उन्हें सम्मान और आदर नहीं मिल पाता और अगर बेटे सफल होते हैं तो उनके साथ उनके परिवार और विशेषकर पिता का सम्मान भी बढ़ता है। इसलिए सफल होने के लिए और समाज में सम्मान हेतु बेटे पढ़ाई और नौकरी के लिए घर से दूर चले जाते हैं। गाँव में रहने वाले पिता की अपनी कुछ मजबूरियां होती हैं जिसके कारण वो घर-बार छोड़कर हमेशा अपने बेटों के साथ उनके नौकरी वाले शहर में नहीं रह सकते। बेटे अपनी व्यस्त जिन्दगी से समय निकालकर जब अपने पिता से मिलते हैं तो दिनों-दिन अपने पिता के गिरते स्वास्थ्य को देखकर बहुत चिंतित होते हैं परन्तु वो ये कभी अपने पिता को जाहिर नहीं होने देते। बेटे यह अनुभव करते हैं कि यही पिता पहले कितने सख्त होते थे और आज कितने कोमल हो गए हैं, पहले वे अपने निर्णय पर अडिग होते थे और वो बेटों को मानना पड़ता था परन्तु पिता अब वही निर्णय लेते हैं जो बच्चों को अच्छा लगता है।

पहले यही पिता अपने बच्चों को पढ़ने के लिए बाहर भेजते समय खुशी का अनुभव करते थे परन्तु अब अपने नौकरी पर जाते हुए बेटे को विदा करते समय उनकी आँखें नम रहती हैं। अपने कमजोर होते पिता को महसूस कर बेटे भी भावुक हो जाते हैं।

बच्चों के लिए पिता की दौलत नहीं, साया ही काफी होता है।

पिता अभिमान है, पिता स्वाभिमान है, पिता धरती भी है और पिता आसमान है।

पिता ने ही लिखना सिखाया, उनके बारे में क्या लिखूँ, जीवन का हर एक कण उन्हीं के नाम है।



अन्नू बाजपेयी
कनिष्ठ अनुवादक

स्व-भाव मंजरी

नदिया, अंबुज, अंबुधि और झीलों के छोर
सारे जल से ज़्यादा गहरी है आँखों की कोर
गहरी हवा बसंतों वाली
गहरी रातें नीरव काली
गहरे मीठे स्वप्न सजीले
सबसे गहरा जग का माली
वो सुंदर, निर्मल, पावन है, वो सतचित है वो है अखोर
सारे जल से ज़्यादा गहरी है आँखों की कोर
सतरंगी से पंख फैलाकर
खुले हुए अंबर में जाकर
कभी-कभी मन करता है
मधुर-मधुर गीतों को गाकर
लहराकर मैं केश कलंगी नाचूं जैसे केकी मोर
सारे जल से ज़्यादा गहरी है आँखों की कोर
प्राची में चढ़ता बाल-रवि
स्नेहमयी है शिशु की छवि
क्यूँ भाव भरा ममता का अरुण
कहीं बन न जाऊँ मैं भी कवि
जाता-जाता तिमिर देखकर आती-आती नित नव भोर
सारे जल से ज़्यादा गहरी है आँखों की कोर
जीवन एक अकथ कहानी है
इसकी क्या थाह लगानी है
भावों का संगम उफनाता
पर ये स्थिर सा पानी है
भीतर-भीतर सूनापन है, बाहर-बाहर बढ़ता शोर
सारे जल से ज़्यादा गहरी है आँखों की कोर
दुलक गया यदि आंसू जो
अनायास ही गातों पर
लगता है मोहन रीझ गए
बेतुक नीरस सी बातों पर
मांझी तेरी नैया में है बंधी हुई जीवन की डोर
सारे जल से ज़्यादा गहरी है आँखों की कोर



मोहित तोमर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक यात्रा ऐसी भी

नमस्कार मित्रों!

शुरू करते हैं एक और सफर। बात है सितंबर 2022 की, मैं और मेरा मित्र दार्जीलिंग घूमने गए थे। दार्जीलिंग के विषय में तो आप सब जानते ही होंगे, इसे हिमालयन क्वीन के नाम से भी जाना जाता है। सफर के आने वाले भाग में इसके विषय में हम और भी जानने वाले हैं।

तो सफर की शुरुआत होती है इन्दिरा गांधी हवाई अड्डे के टर्मिनल 2 से, जहाँ से हमें मिलती है अपनी फ्लाइट बागडोगरा के लिए। बागडोगरा पश्चिम बंगाल में स्थित है, जहाँ से आपको लगातार दार्जीलिंग एवं गंगटोक के लिए टैक्सी मिलती रहेगी। आईजीआई हवाई अड्डे के टर्मिनल 2 पर बरिस्ता कॉफी शॉप है जहाँ की कैफ़े मोका नाम की कॉफी अच्छी है, जिसका आनंद लेने के बाद हम आगे बोर्डिंग गेट की ओर बढ़ जाते हैं। अगर आप वहाँ से गुजरें तो एक बार ट्राय ज़रूर करें।

तो सफर आगे बढ़ता है, हम लोग यानि कि मैं, मेरी पत्नी, मेरा दोस्त सौरव उनकी पत्नी दीप्ति हम चार लोग बागडोगरा हवाई अड्डे से बाहर आकर गाड़ी बुक कर दार्जीलिंग के लिए निकल पड़ते हैं। यह लगभग 75 किमी का सफर हम लोग लगभग तीन से चार घंटों में पार करते हैं। रास्ते में बहुत सारे टी एस्टेट/चाय के बागान पार करने के बाद पेड़ों से भरी पहाड़ियाँ शुरू हो जाती हैं। जहाँ से चिड़ियों और झींगुरों की आवाज तेज होनी शुरू हो जाती है।

पहाड़ी रास्ता थोड़ा ही पार होता है कि हम लोगों को भूख लगनी शुरू हो जाती है, तब वहीं रास्ते में हमारे गाड़ी वाले भाई गाड़ी रोक देते हैं। ढाबे पे खाने के बहुत ज़्यादा विकल्प न होने के कारण हम लोग दाल-चावल और आलू की भाजी मँगवा लेते हैं। खाने का स्वाद उत्तम तो नहीं था परंतु आलू की भाजी के साथ खाने में मजा ही आ गया।

उसके बाद हम लोग आगे के सफर पर निकल जाते हैं, बीच में एक टाउन पड़ता है जहाँ पर टोय ट्रेन हमारी गाड़ी के बिल्कुल साथ-साथ चल रही थी। इतने में क्या होता है कि दीप्ति भाभी को उल्टी होने लगती है। पहाड़ी रास्तों की यही मुश्किल है कि आपको उल्टी आएगी हालांकि सबको ऐसी परेशानी नहीं होती परंतु ज़्यादातर लोगों को मैं जानता हूँ जिनको पहाड़ी रास्तों से जाना तो बहुत पसंद होता है पर वो जाते ही उल्टी करना शुरू कर देते हैं।

ऐसे ही गाड़ी रुकते-रुकते हम पहुँच जाते हैं मॉल रोड पर जहाँ पर हमने होटल बुक किया था। एक बात जो कुछ अलग थी कि वहाँ पर होटल के कमरों में पंखे नहीं लगे थे, रात में मौसम सर्द हो जाता है। चूँकि हमें रास्ते भर रुक-रुक कर आना पड़ा इसलिए हम रात में थोड़ा लेट हो गए थे तो हमने होटल में फोन करके उन्हें खाना बनाने के लिए पहले से कह दिया था तो हमारे वहाँ पहुँचने तक रेस्टोरेंट में कुछ स्टाफ रुक गया था। चेक इन करते ही हम खाना खाने पहुँच जाते हैं, खाने की गुणवत्ता अच्छी थी। भोजन

करने के बाद हमने टहलने का विचार किया परंतु हम लोग लंबे सफर से थक चुके थे तो अपने कमरों में जाकर सब सो जाते हैं।

सुप्रभात! अगले दिन की शुरुआत कुछ ज़्यादा ही जल्दी हो जाती है, हम लोगों का प्लान दार्जीलिंग के मशहूर पर्यटन स्थल टाइगर हिल सन राइज़ पॉइंट जाने का था तो हम लोग तड़के 3 बजे उठ कर 3:30 बजे तक तैयार हो गए। फिर हमने अपने गाड़ी वाले भाई को फोन किया। उन्होंने बताया कि उन्हें पूरे दिन की बुकिंग मिल गई है और उन्होंने होटल के पास में एक जगह बताई जहाँ पे हमें दूसरी गाड़ी मिलने वाली थी। हमें सुनकर थोड़ा अजीब लगा कि ऐसा कोई क्यों करेगा?

थोड़ा गुस्सा दिखाने के बाद हम लोग उस जगह पहुँच जाते हैं जहाँ से बहुत सारी गाड़ियाँ टाइगर हिल सन राइज़ व्यू पॉइंट के लिए जा रही थी। वहाँ पे बहुत सारी गाड़ियाँ थीं, हमने पता किया और बैठ गए। हमारे समझने में फर्क रहा और बैठे-बैठे 30 मिनट हो गए। उसके बाद गाड़ी वाले भाई से पूछा तो उसने बताया कि मैं तो गाड़ी भर के लेके जाऊंगा। जब वो वहाँ से निकला तो टाइगर हिल के पास पहुँचते-पहुँचते सन राइज़ होने का टाइम हो गया था। वहाँ सैकड़ों गाड़ियाँ थी, सब लोग हड़बड़ी में पैदल ही चल पड़े थे क्योंकि वहाँ जाम लग गया था। ये सब देखकर हम लोग भी गाड़ी से उतर कर पैदल ही चल पड़े।

मेरे दोस्त ज़्यादा मेहनत नहीं कर पाते अतः उनको पहुँचने में अधिक समय लग रहा था तो उन्होंने हमसे कहा कि आप लोग जाओ मैं धीरे-धीरे वहाँ पहुँच रहा हूँ। फिर हम दोनों भाग-भाग कर व्यू पॉइंट पर जाने के लिए आगे बढ़ते हैं। वहाँ जाकर हमने देखा कि बहुत सारे पर्यटक पहले से ही वहाँ पहुँच चुके थे। टाइगर हिल प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग जैसा है। जैसे ही भोर की पहली किरण आसमान रोशन करना शुरू करती है, तो सारे पर्यटक एकदम शांत हो जाते हैं और हर एक पर्यटक एकटक पूर्व दिशा की ओर अपनी दृष्टि कर देता है। धीरे-धीरे अंधेरा छँटता जाता है और सब लोग प्रकृति की इस भव्यता में खो जाते हैं।



टाइगर हिल से सूर्योदय की झलक

अभी हम लोग टाइगर हिल के विषय में कुछ तथ्यों से अवगत होंगे, टाइगर हिल की समुद्र तल से ऊँचाई 2590 मीटर है। यह भारत के पश्चिम बंगाल राज्य के दार्जीलिंग जिले में दार्जीलिंग शहर के पास स्थित है। यहाँ से कंचनजंघा और अन्य पर्वत चोटियों के मनोरम दृश्यों के साथ साथ वर्ष में कुछ समय जब वातावरण साफ रहे तो माउंट एवरेस्ट, जोकि विश्व की सर्वोच्च चोटी है, को भी देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त टाइगर हिल, यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहरों में शामिल दार्जीलिंग हिमालयी रेलवे के

घुम रेलवे स्टेशन के पास स्थित है, जो भारत का सबसे ऊँचाई पर स्थित रेलवे स्टेशन है। इसके साथ ही इसे दार्जिलिंग में स्थित “पहाड़ियों की रानी” के रूप में भी जाना जाता है।



टाइगर हिल से कंचनजंघा का एक दृश्य



चाय के बागान का दृश्य

टाइगर हिल पर सूर्योदय का आनंद लेने के बाद हम थोड़ा विश्राम कर ही रहे थे कि गाड़ी वाले भाई का फोन आता है और वह कहता है कि फटाफट नीचे आओ वापिस जाना है। यह सुनकर मेरे दोस्त को गुस्सा आ गया क्योंकि वह अभी पहुँचा ही था। हमने उसको बोला की हम लोग घूमने आए हैं तो कुछ देर बैठेंगे, आप प्रतीक्षा करें। वो यह सुनकर भड़क गया और बार-बार फोन करने लगा। यह बात हमें बागडोगरा एयरपोर्ट पर कुछ पर्यटकों ने बताई भी थी, कि दार्जिलिंग में गाड़ी वाले/टूरिस्ट गाड़ी वाले ड्राइवर का व्यवहार अच्छा नहीं होता। हमने उन्हे यह सोचकर नकार दिया कि सब लोग एक जैसे नहीं होते।

परंतु, कुछ देर बाद वो गाड़ी लेके ऊपर पार्किंग तक आ जाता है और बार-बार फोन करने लगता है। हम लोग पार्किंग तक आते है कि उसको बोल देंगे कि आपको जल्दी हो तो आप चले जाओ। वहाँ पहुँच कर माहोल और गरम हो गया। उसने देखते ही बदतमीजी की और ये देख के हम सबको गुस्सा आ गया और 10-15 मिनट तक वाक्युद्ध चलता रहा। फिर गाड़ी में से बाकी सवारी उतर के बोली कि कृपया आप बैठ जाओ, मेरी फ्लाइट है और मुझे वापिस जल्दी जाना है। सवारी की बात सुनकर हम गाड़ी में बैठ गए। पर इस घटना ने दार्जिलिंग को दोबारा जाने की सूची में काफी नीचे पहुँचा दिया।

इसके बाद हम दार्जिलिंग पहुँच कर दोपहर का भोजन करते है और बाकी पर्यटक स्थल देखने निकल जाते हैं। सबसे पहले हम लोग पद्मजा नायडू हिमालयन जूलॉजिकल पार्क देखने जाते हैं। पद्मजा नायडू हिमालयन जूलॉजिकल पार्क 67.56 एकड़ में फैला हुआ है तथा 14 अगस्त 1958 को इसकी स्थापना की गई थी। इसकी औसत ऊँचाई लगभग 7000 फीट है तथा यह भारत में सबसे ऊँचाई पर स्थित चिड़ियाघर या जूलॉजिकल पार्क है। इस जूलॉजिकल पार्क का नाम 1975 में बदलकर सुश्री सरोजिनी नायडू की पुत्री सुश्री पद्मजा नायडू (1900-1975) के नाम पर रखा गया।



पद्मजा नायडू हिमालयन ज़ूलॉजिकल पार्क के कुछ दृश्य

पद्मजा नायडू हिमालयन ज़ूलॉजिकल पार्क को देखने के बाद हम लोग बाहर आते हैं। सब लोग थोड़ा थक गए थे क्योंकि ज़ूलॉजिकल पार्क में बहुत चलना पड़ा था, तो बाहर आकर सबने चाय का आनंद लिया। उसके बाद सभी लोग सफर के अगले पड़ाव पर निकल पड़े।

पड़ाव का नाम था शांति स्तूप जोकि हिमालयन रेलवे से 2.5 किमी की दूरी पर है। यह दार्जिलिंग में सबसे लोकप्रिय आकर्षणों में से एक है। शांति स्तूप की स्थापना एक जापानी बौद्ध भिक्षु निकिडत्सु फूजी के देखरेख में किया गया था। इसकी आधारशीला 1972 में रखी गई तथा 1 नवंबर 1992 में इसका उद्घाटन किया गया। इसमें स्थित पैगोडा की ऊँचाई 94 फीट तथा व्यास 75 फीट है। यह दार्जिलिंग में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है तथा यहाँ आकर एक अलग अनुभव मिला।



शांति स्तूप



वॉर मेमोरियल

शांति स्तूप के बाद हम लोग बतासिया लूप और युद्ध स्मारक देखने जाते हैं, जिसका निर्माण जिला सैनिक बार्ड, दार्जिलिंग द्वारा उन वीर गोरखा सैनिकों की याद में किया गया था, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। इस स्मारक का निर्माण 22 मार्च, 1995 को किया गया था।

बतासिया लूप और युद्ध स्मारक देखने के बाद हम सब लोग होटल जाते हैं। चूँकि सब लोग थके हुए थे तो सब सो जाते हैं। अगली सुबह सब लोग तैयार होकर नाश्ता करते समय दिन की योजना पर विचार करते हैं। दार्जिलिंग में चाय के बागान और व्यू पॉइंट जाने की बात पर सब लोग सहमत होते हैं और नाश्ता करने के बाद हम निकल पड़ते हैं।

पहले हम टी एस्टेट/चाय के बागान में जाते हैं वहाँ की खूबसूरती और चाय की महक के कारण चाय पीने का मन हो जाता है। वहीं बाहर सड़क किनारे बहुत सारी चाय की दुकानें थीं, जहाँ से हम चाय पीते हैं, घर के लिए चाय खरीदते हैं और व्यू पॉइंट के लिए निकल पड़ते हैं। व्यू पॉइंट वाकई शानदार जगह है, वहाँ से दार्जिलिंग का जो दृश्य था वो आँखों में बस गया और आज भी उसकी याद आ जाती है।



दार्जिलिंग व्यू पॉइंट के दृश्य

व्यू पॉइंट पर समय बिताने के बाद हम लोग केबल कार का अनुभव लेने के लिए जाते हैं, परंतु कुछ तकनीकी कारणों से उस दिन केबल कार की सेवाएँ उपलब्ध नहीं हो पाई तो निराश होकर हम वापिस होटल आ गए। मेरे मित्र और उनकी अर्धांगिनी सिक्किम की यात्रा पर आगे निकल गए और मैं और मेरी बेटर हाफ अपनी-अपनी मंजिल के लिए निकल पड़े, बागडोगरा हवाई अड्डे की ओर। उम्मीद है आपको यह यात्रा अच्छी लगे। दार्जिलिंग एक बहुत खूबसूरत जगह है और आशा है कि आप लोग भी वहाँ जाएँ और अपने अनुभव साझा करें।



नवीन
लेखापरीक्षक

रूप रंग की उलझन

दिखते हैं सब में रंग कई
पर रंगों का कोई रूप नहीं।

तुम रूप के पीछे न भागो
यहाँ रूप का अपना रंग नहीं।

हर रूप पे जो रंग दिखता है
बस रंग है वो कोई रूप नहीं।

इस रूप रंग की उलझन में
जीवन में बचता रंग नहीं।

तुम प्रेम करो, बस प्रेम करो
इस प्रेम सा कोई रूप नहीं।

बस प्रेम ही खुशियाँ देता है
कोई रूप नहीं ,कोई रंग नहीं।



मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

दर्शन हों तो ऐसे....

मेरे ग्वालियर ऑफिस में प्रथम कार्यकाल जुलाई 2018 से सितम्बर 2019 के लगभग 15 महीनों के दौरान, मुझे मुरैना जिले में स्थित भगवान श्री शनिदेव के प्राचीन शनिश्चरा मन्दिर जाने का सौभाग्य नहीं मिल पाया था। जो इस बार मुझे ग्वालियर ऑडिट के दौरान आखिरकार मिल ही गया, जिसे मैं, आप सबके मध्य साझा कर रहा हूँ अपने लेख “दर्शन हों तो ऐसे....” के माध्यम से। तो मित्रों! चलिए मेरे साथ इस सफर पर....

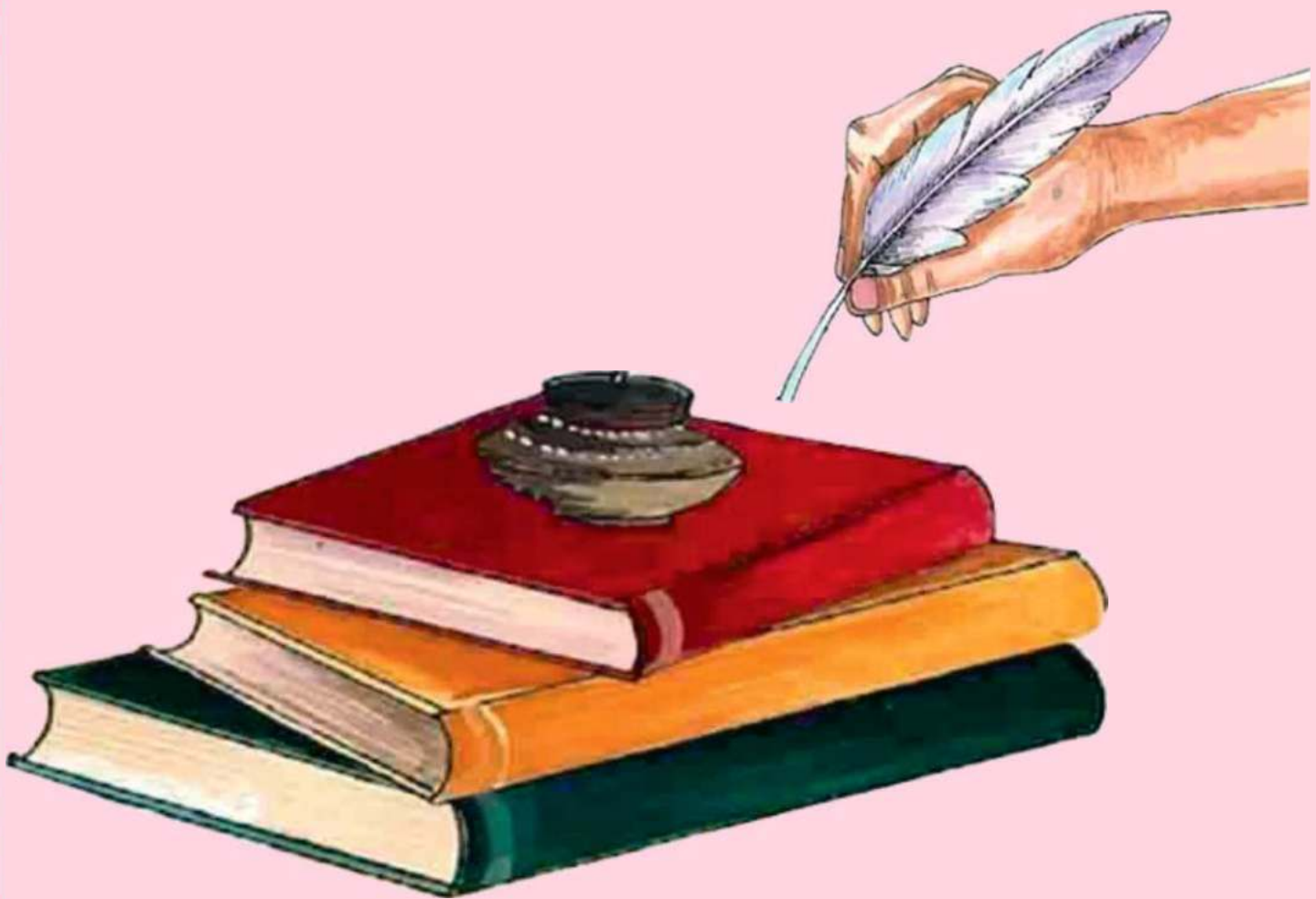
दिनांक 18 जून 2024 का दिन और लगभग 6 बजे का समय था, हम ग्वालियर में अपने ऑडिट के आखिरी दिन का कार्य समाप्त कर चुके थे। मुझे मेरे मित्र ने एक बार ग्वालियर से सिर्फ 23-24 किलोमीटर दूर मुरैना जिले में स्थित भगवान श्री शनिदेव के प्राचीन शनिश्चरा मन्दिर के बारे में बताया था और कहा था कि अगर संभव हो तो जाने से पहले शनिश्चरा मंदिर के दर्शन करके जरूर जाना, जो पिछली बार अधूरा रह गया था। मैंने घड़ी की तरफ देखा, लगभग 23-24 किलोमीटर का रास्ता, अंधेरा होने में लगभग सवा घंटे का समय, दिल ने कहा ये संभव है। फिर कंपनी प्रबंधन से विदा लेने के बाद हम (मैं, हरिओम और ओम प्रकाश जी) निकल पड़े भगवान श्री शनिदेव के दर्शन करने। बाहर अब भी हल्की धूप निकल रही थी, हवा में गर्मी थी और आसमान में हल्के-हल्के बादल छाए हुए थे। हम लगभग 15-16 किलोमीटर का सफर तय कर चुके थे, अब बादल और घने हो चले थे। पहले जोर की धूल भरी आंधी आयी और फिर धीरे-धीरे बारिश शुरू हो गयी, परन्तु गाड़ी में होने की वजह से हम बच गए। अब हम ग्वालियर को पार कर मुरैना जिले में चल रहे थे और मंदिर अभी भी 5-6 किलोमीटर दूर था। हमारे चारों तरफ जंगल, पहाड़ और कहीं-कहीं फसल कटने के बाद की खाली पड़ी जमीन भी थी। अब बारिश काफी तेज हो चुकी थी और हमारी गाड़ी 10 से 15 किलोमीटर की स्पीड में धीरे-धीरे हवाओं के थपेड़े खाती हुई तेज आंधी और बरसात के बीच में अपने गंतव्य स्थान की तरफ बढ़ रही थी। इस समय निरंतर होती बारिश से मौसम सुहावना हो चुका था, चारों तरफ अति उत्कृष्ट नजारा था। गाड़ी के सामने के शीशे पर पड़ रही बारिश की बूंदों को वाइपर द्वारा पूर्ण गति से हटाये जाने के बाद भी सामने का रास्ता साफ नहीं दिख रहा था और घुमावदार रास्ते पर सामने देखकर गाड़ी चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था। दो-तीन जगह अन्य रास्तों के मोड़ आए, जहाँ पर हमें यह समझना बड़ा मुश्किल हो रहा था कि सही रास्ता कौन सा है? उस समय, हमने गूगल मैप की मदद से सही

रास्ता चुना जो अभी भी 3-4 किलोमीटर दूर था। पहाड़ों से घिरा होने की वजह से रास्ता पथरीला था, जिससे जल्द ही जगह-जगह पानी का भराव होने लगा, ऊपर से इंद्रदेव भी ग्वालियर वासियों को गर्मी से निजात दिलाने हेतु पूरे जोर-शोर से बारिश करवा रहे थे। उस समय धीरे-धीरे काले बादलों के बीच सड़क पर गुज़रते हुए हमारी गाड़ी अकेली दिख रही थी, जबकि आस-पास से गुज़रने वाले अन्य सभी वाहन अपनी सुविधानुसार साइड में रोक कर कोई बस स्टैंड के नीचे, कोई किसी दुकान के नीचे खड़े होकर बारिश के रुकने का इंतजार कर रहे थे। धीरे-धीरे हमारी गाड़ी तेज बारिश में बिना रुके अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गई। भगवान श्री शनिदेव के इस मंदिर को अन्य शनि मंदिरों में अति प्राचीन माना जाता है। इस मंदिर के विषय में कहा जाता है कि लंका विध्वंस के समय भगवान श्री हनुमान ने भगवान श्री शनिदेव को लंका से उठाकर जब भारतवर्ष की तरफ उछाला था, तो भगवान श्री शनि पिंड इसी जगह पर आकर गिरा था। अर्थात् अगर अन्य शब्दों में कहें तो यह मंदिर महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित शनि शिंगणापुर मंदिर से भी ज़्यादा पुराना और मान्यता प्राप्त शनिश्चरा धाम है। यहाँ पर मान्यता है कि भगवान श्री शनिदेव की पूजा-अर्चना करने से इंसान के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

लगातार हो रही बारिश की वजह से बिल्कुल भी भीड़ नहीं थी और लगभग सभी दुकाने बंद थीं, हमारी गाड़ी मंदिर के मुख्य द्वार के सामने रुकी, भगवान श्री शनिदेव का प्राचीन शनिश्चरा मन्दिर मुख्य मार्ग से हटकर थोड़े ढलान पर स्थित है, जिस पर पिछले आधे घंटे से हो रही बारिश की वजह से पानी लगातार ऊँचाई से नीचे की तरफ बह रहा था। हमने बारिश के रुकने का इंतजार किया और बरसात हल्की होने पर पैदल ही मंदिर के लिए निकल पड़े। हम जल्दी से भागते हुए मंदिर के रास्ते की तरफ नीचे चल पड़े, जहाँ पानी की धारा भी अपना रास्ता बनाते हुए हमारे साथ-साथ नीचे बह रही थी। शाम के लगभग 7 बजे के समय, रिमझिम बारिश के बीच चलती हुई ठंडी हवा, पाँव के नीचे से लगातार बहता हुआ पानी, झुलसाने वाली गर्मी से बचने के लिए इससे बेहतर और क्या चाहिए? बहुत ही खूबसूरत नजारा था मंदिर के प्रांगण का। हम धीरे-धीरे रेलिंग को पकड़ते हुए बहते पानी में पैरों की जगह बनाते हुए नीचे उतर रहे थे, ताकि मिट्टी और पानी की वजह से कहीं हम फिसल कर गिर न पड़ें। मंदिर प्रांगण में सर्वप्रथम हमें भगवान श्री गणेश जी के दर्शन हुए, फिर माँ श्री कालिके और भगवान श्री हनुमान जी के दर्शन करते हुए हम लगातार नीचे की ओर बढ़ रहे थे, पूरे मंदिर में पानी बह रहा था, बिल्कुल भी भीड़ नहीं थी और मुख्य कक्ष की तरफ बढ़ते हुए हमें भगवान श्री भोलेनाथ के शिवलिंग स्वरूप के भी दर्शन हुए। आखिर में हम भगवान शनिदेव के सामने पहुँचे, जहाँ पर ऐसा प्रतीत हुआ कि प्राचीन प्रतिमा स्वरूप स्वयं भगवान श्री शनिदेव साक्षात् हमारा इंतजार कर रहे हों। अब हमारी देखा-देखी, अन्य लोग भी हमारे पीछे-पीछे दर्शन हेतु अन्दर आ चुके थे। उन्हीं में से दो व्यक्तियों ने मुझसे कहा कि आप बहुत खुशकिस्मत हैं जो आपको इतने अच्छे दर्शन हुए हैं वरना भगवान श्री शनिदेव की इस प्रतिमा के पास आने का मौका हर किसी को नहीं मिलता।

लोगों को बाहर से ही भगवान श्री शनिदेव के दर्शन होते हैं, जबकि आज मैंने स्वयं भगवान के समीप जाकर न सिर्फ उनके दर्शन किए, बल्कि उनका आशीर्वाद भी प्राप्त किया, बहुत ही अद्भुत नजारा था। वहाँ पर कुछ समय बिताने के बाद, हमने सीधे हाथ की तरफ बने मार्ग के सामने भगवान श्री राधे-

कृष्णा जी के दर्शन कर उनको प्रणाम किया। भगवान के पास से ही एक नीचे की तरफ जाती हुई सीढ़ियां दिखाई दीं, जोकि एक छोटे से लोहे के गेट से बंद थीं, जिसे वहाँ के साधु-संतों की तपस्या का स्थान बताया गया था। हमने उस पवित्र स्थान को भी प्रणाम किया, अब लगभग पूरी तरह से अंधेरा हो चुका था और दर्शन करने के बाद, हम धीरे-धीरे वापस मंदिर के बाहर आने लगे, ऊपर से गिरते हुए पानी का बहाव भी पहले से कम हो चुका था। लेकिन जून की गर्मी के इस मौसम में मिले इतने मनभावन अनुभव के बाद हमारा दिल गदगद हो रहा था। हमने मंदिर से बाहर आकर, भगवान श्री शनिदेव को हाथ जोड़कर उनसे विदा ली और फिर वापस ग्वालियर के लिए निकल पड़े। अभी हम आधे रास्ते ही पहुँचे थे कि बारिश फिर से तेज़ होने लगी और उस मूसलाधार बारिश में, हमारे मंझे हुए ड्राइवर को भी गाड़ी बैलेंस करने में काफी दिक्कतें हो रही थीं। बारिश से भीगते रास्ते पर हम धीरे-धीरे अपने-अपने गंतव्य स्थान पर वापस पहुँच गए। अपने कमरे में पहुँचने के बाद, अपने इस अनुभव पर बस एक ही बात मेरे मन में बार-बार घूम रही थी कि भगवान श्री शनिदेव! आप तो अपने भक्तों को हमेशा दर्शन देते हो, पर आज जो दर्शन आपने हमें दिए हैं, वैसे ही दर्शन अपने अन्य भक्तों को भी देना ताकि आज सिर्फ मैं ही नहीं अपितु आपके सभी भक्त कहें कि आपके दर्शन हों, तो ऐसे!





पुष्पेन्द्र सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कहाँ खो गया हूँ

ढूँढता हूँ खुद को, कि कहाँ मैं यार आ गया।

मैं मिल गया हूँ धूल में या धूल मुझ पर छा गया।।

होश ही नहीं रहा, कि किस भीड़ में खो गया।

शाम को मैं घर गया, कि रास्ते में सो गया।

पता नहीं कि चलते-चलते, कब कहाँ मैं आ गया।

ढूँढता हूँ खुद को, कि कहाँ मैं यार आ गया।

मां के हाथों का खाना, खाता था अचार से।

डांटती वो रोज़ थी, खिलाती थी पर प्यार से।

आज कुछ पता नहीं, क्या कहाँ खाकर आ गया।

ढूँढता हूँ खुद को, कि कहाँ मैं यार आ गया।

जाने कहाँ खो गया है, मेरे बचपनों का घर।

पूछता है भाई, ओए भाई रहता है किधर।

मैं अकेला हो गया हूँ, ये आईना बता गया।

ढूँढता हूँ खुद को, कि कहाँ मैं यार आ गया।



अमित कुमार
लेखापरीक्षक

प्रसन्नता: एक खोज

शिवम चौहान एक बहुत बड़े उद्योगपति थे, भारी उद्योग के क्षेत्र में उनका बहुत बड़ा नाम था। शिवम इंडस्ट्रीज के नाम से उनका व्यापार दूर तक फैला था। उनका प्रति माह करोड़ों का लेन-देन होता था, इसके लिए उन्होंने कुशल कर्मचारी एवं चतुर तथा ईमानदार प्रबंधकों को नियुक्त किया था। शिवम चौहान के एक पुत्र गोविन्द एवं एक पुत्री गौरांगी थे। उनके दोनों बच्चों के विवाह हो चुके थे। केशवपुरम जैसे बड़े शहर में उनका एक आलिशान महल था, जिसमें नौकर-चाकर की कोई कमी न थी। घर में भोजन बनाने के लिए कुशल रसोईयों की एक टीम थी।

सब सुख-सुविधाओं के बावजूद शिवम अपने निजी जीवन में प्रसन्न नहीं थे। वे अपने खुश न रहने के पीछे का रहस्य जानना चाहते थे। इसके लिए वे निरंतर बुद्धिमान पुरुषों से सलाह भी लेते रहते थे। कई बार तो वे अपने काफिले के साथ तीर्थ स्थलों की यात्रा पर भी जाते थे, लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद वे अपने जीवन में प्रसन्नता ढूँढने में विफल रहे।

एक बार शिवम चौहान अपने घनिष्ठ मित्र रामचंद्र के घर एक उत्सव में उससे मिलने गए। वहाँ पर शिवम की मुलाकात पूजा के लिए आये एक साधु से हुई। साधु बहुत ही प्रसन्न थे एवं उनका चित्त शांत था। उनको देखने से ही शिवम को जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि हो न हो, वे मेरी समस्या का समाधान कर सकते हैं। उचित अवसर देखकर शिवम ने साधु को प्रणाम करके अपनी समस्या बताई कि वह जीवन में तमाम कोशिशों के बावजूद प्रसन्न नहीं रह पा रहे हैं। साधु ने ध्यानपूर्वक शिवम की समस्याओं के बारे में जाना एवं उनसे कहा कि हम जैसे परिवेश में रहते हैं, हम भी वैसे ही हो जाते हैं। शिवम जी यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति की कमीज पहन लेंगे, जो अपने जीवन में प्रसन्न है, तो निश्चित ही आप भी प्रसन्न हो जायेंगे। लेकिन ध्यान रहे कि कमीज वह अपनी स्वेच्छा से दे, न कि किसी दबाव से। अपनी समस्या का हल जानकर शिवम की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा, उसने साधु को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया।

शिवम ने घर आने के बाद अपने परिवार के सभी लोगों से कहा कि आप सभी हमेशा प्रसन्न रहते हो। कृपया मुझे अपनी कमीज दे दें, ताकि उस कमीज को पहनकर साधु महाराज के कथनानुसार मैं भी प्रसन्न हो सकूँ। शिवम के पुत्र ने बताया कि वह प्रसन्न नहीं है। उसकी अपनी पत्नी से लड़ाई होती रहती है तथा व्यापार में होने वाली दिन-प्रतिदिन की भाग-दौड़ से वह बहुत परेशान रहता है। शिवम ने परिवार, रिश्तेदारों इत्यादि से निवेदन किया कि क्योंकि वे प्रसन्न हैं इसलिए वे अपनी एक कमीज मुझे दे दें, लेकिन सभी ओर से केवल निराशा ही प्राप्त हुई।

शिवम चौहान ने अपनी कंपनी के प्रबंधक, कर्मचारियों इत्यादि के बीच घोषणा भी करवाई, किन्तु कोई भी सामने नहीं आया। अंततः शिवम को ही शानदार विचार आया। उसने समाचार पत्र इत्यादि के माध्यम से यह सूचना प्रसारित करवाई कि यदि कोई भी मेरे पास किसी प्रसन्न व्यक्ति की कमीज लेकर आएगा या उसके बारे में सूचना देगा उसे शिवम चौहान द्वारा भारी धनराशि से पुरस्कृत किया जाएगा किन्तु यदि कोई व्यक्ति गलत सूचना देता है तो उसे दंड दिया जाएगा।

श्याम के माता-पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। उसे उसकी मौसी वृंदा देवी ने पाला था, लेकिन जब श्याम 6 वर्ष का था तब उसकी मौसी भी उसे छोड़कर परलोक सिधार गई। श्याम बिल्कुल अनाथ था। जीविका के लिए वह ट्रैफिक सिग्नल पर भीख मांगता था। ऐसे ही एक दिन जब वह भीख मांग रहा था तब शिवम चौहान ने उसको देखा और उसके परिवार वालों के बारे में पूछा। जब शिवम को पता चला कि श्याम अनाथ है तब शिवम ने उसके पालन-पोषण का सारा जिम्मा खुद लिया। श्याम ने खूब मेहनत की और वर्षों की मेहनत के बाद वह पुलिस विभाग में एसपी बन गया। सौभाग्य से उसकी तैनाती केशवपुरम में ही हुई थी। श्याम बचपन से ही शिवम चौहान को अपने पिता की तरह ही मानता था।

जब श्याम ने इस बारे में सुना कि शिवम चौहान को एक प्रसन्न व्यक्ति की कमीज की आवश्यकता है, तब निश्चय किया कि वह शिवम की अवश्य सहायता करेगा। उसने पुलिस विभाग के कर्मचारियों को आदेश दिया कि जो कोई व्यक्ति उन्हें प्रसन्न दिखाई दे, उस व्यक्ति से सुनिश्चित करने के बाद कि वह प्रसन्न है, उसे तुरंत श्याम के पास लाया जाए।

एसपी महोदय की अवहेलना कोई नहीं कर सकता था। इसलिए पुलिस विभाग एक प्रसन्न व्यक्ति की तलाश में लग गया। काफी दिन गुजर गए किन्तु पुलिस एक प्रसन्न व्यक्ति की तलाश नहीं कर सकी। यदि कोई उन्हें प्रसन्न लगता भी था तो पूछने पर पता चलता था कि वह बहुत दुखी है, बस अपना दुख छिपा रहा है।

एक दिन जब पुलिस के कुछ कर्मचारी एक छोटे से चाय के स्टॉल पर चाय पी रहे थे तब उनकी दृष्टि एक रिक्शावाले पर पड़ी जो बहुत ही प्रसन्न था तथा मस्ती में कुछ गुन गुना रहा था। पहले तो पुलिस वालों ने उसे नजरअंदाज किया किन्तु फिर उन्होंने उसके बारे में आस-पास पूछताछ की। पूछताछ करने पर पता

यह जीवन इस शरीर की एक यात्रा है जोकि बचपन से प्रारम्भ होकर बुढ़ापे या मृत्यु पर समाप्त होती है। ध्यान रहे यह केवल इस शरीर की यात्रा है। हम सब अपने जीवन में कार्य करते हुए अनेक सुख एवं दुख का सामना करते हैं, परिस्थितियाँ दिन-प्रतिदिन बदलती रहती हैं। हम चाहे कितना भी सुखी रहने का प्रयास करें, हमें दुख उसी प्रकार ढूँढ लेता है जिस प्रकार एक बछड़ा अनेक गायों के मध्य अपनी माँ को ढूँढ लेता है। यह सब हमारे इस जन्म एवं पूर्व जन्म के कर्मों के फल के कारण हैं।

शिवम चौहान ने पूछा कि इस जन्म का तो समझ आता है लेकिन पूर्व जन्म के कर्मों का फल, वो कैसे मिलता है, क्या मृत्यु के पश्चात जब यह शरीर नष्ट हो जाता है तो इस शरीर से जुड़े सभी कार्यकलापों की तरह कर्म समाप्त नहीं हो जाते। इस पर नारायण ने कहा कि आप एक व्यापारी हैं जब आपको कोई काम मिलता है, कुछ कार्य तो आप तत्काल कर देते हैं लेकिन कुछ कार्य आप तुरंत नहीं कर पाते बल्कि उसे करने में कई दिन या महीने भी लग जाते हैं लेकिन उस दौरान आप कितनी बार वस्त्र बदलते हैं, खाना खाते हैं लेकिन आप समाप्ति तक अपना कार्य करते हैं, फिर आपको अन्य कोई कार्य मिल जाता है और यह प्रक्रिया चलती रहती है। इसी प्रकार हमें यह शरीर मिलता है इस शरीर द्वारा किये गए कर्मों के फल जिन्हें हम इस शरीर में नहीं भुगत पाते उन्हें अगले शरीर में भुगतना पड़ता है और फिर अन्य कर्म आ जाते हैं और यह प्रक्रिया शाश्वत चलती रहती है।

शिवम ने पूछा कि कर्मों के इस चक्र से कैसे निकला जाये। नारायण ने बताया कि जिस प्रकार एक राज्य या देश में सभी कार्य उस राज्य या देश के कानून के अनुसार किये जाते हैं तथा जो कानून के अनुसार कार्य नहीं करे, उन्हें दंड दिया जाता है। उसी प्रकार जब व्यक्ति के कर्म भी प्रकृति अर्थात् ईश्वर के अनुसार होते हैं, तो वह व्यक्ति कर्म के चक्र से मुक्त हो जाता है। ईश्वर के अनुसार कर्म करने का अर्थ है कि ईश्वर का नाम लेना, उनसे प्रार्थना करना एवं सबसे बड़ी बात यह है कि मैं की भावना से स्वयं को मुक्त रखना। इसको आप इस तरह से समझ सकते हैं कि किसी की जान एक सैनिक भी लेता है तथा एक आम व्यक्ति भी लेकिन सैनिक को पुरस्कार मिलता है एवं आम व्यक्ति को दंड। चूंकि सैनिक का किसी की जान लेना सरकार (कानून) द्वारा स्वीकृत है, उसी प्रकार जब आप अपने किये गए सभी कर्मों को ईश्वर को समर्पित कर देते हो तो आप कर्म के चक्र से पूर्णतः मुक्त हो जाते हो। इसलिए हे शिवम! यदि तुम जीवन में प्रसन्नता चाहते हो तो अपने द्वारा किये गए सभी कर्मों एवं उनके फलों को ईश्वर को समर्पित कर दो। फिर तुम्हें न तो किसी चीज के मिलने का सुख होगा और न किसी चीज के खोने का दुख और तुम सुख-दुख से ऊपर उठकर अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करोगे।

शिवम चौहान का चेहरा चमक उठा लेकिन वह अभी भी कुछ सोच रहा था। कुछ विचार करने पर वह बोला कि मैं यह और जानना चाहता था कि आपने मुझे यह सब तब क्यों नहीं बताया जब मैं पहले मिलने आया था? तथा प्रसन्न व्यक्ति की कमीज ढूँढने का क्या अर्थ है?

चला कि उसका नाम नारायण है तथा वह हमेशा प्रसन्न रहता है। यह पता चलते ही कुछ कांस्टेबल तुरंत नारायण के पास गए और उससे पूछा कि क्या वह प्रसन्न है? उसे कोई दुख तो नहीं है? जवाब देते हुए नारायण ने उन्हें बताया कि वह बहुत प्रसन्न है और उसे कोई दुख नहीं है।

कांस्टेबल ने नारायण से कहा कि उसे उनके साथ चलना होगा हमारे अधिकारी तुमसे मिलना चाहते हैं। नारायण ने कहा कि उसने कोई गुनाह नहीं किया है, वह कहीं नहीं जायेगा। एक प्रसन्न व्यक्ति मिल गया है इसकी सूचना तुरंत ही पुलिस कर्मचारियों ने अपने एसपी श्याम को दी। पहले तो श्याम स्वयं जाना नहीं चाहता था, किन्तु शिवम चौहान के बारे में सोचकर वह नारायण से मिलने गया। वहाँ जाकर उसने देखा कि नारायण एक रिक्शा चलाता है और अभी वह उसी पर लेटा हुआ है। शिवम ने नारायण से कहा कि मुझे पता चला है कि तुम एक प्रसन्न व्यक्ति हो मुझे तुम्हारी मदद चाहिए। नारायण ने कहा कि वह एक गरीब व्यक्ति है उसके पास कुछ भी नहीं है वह उसकी मदद कैसे कर सकता है?

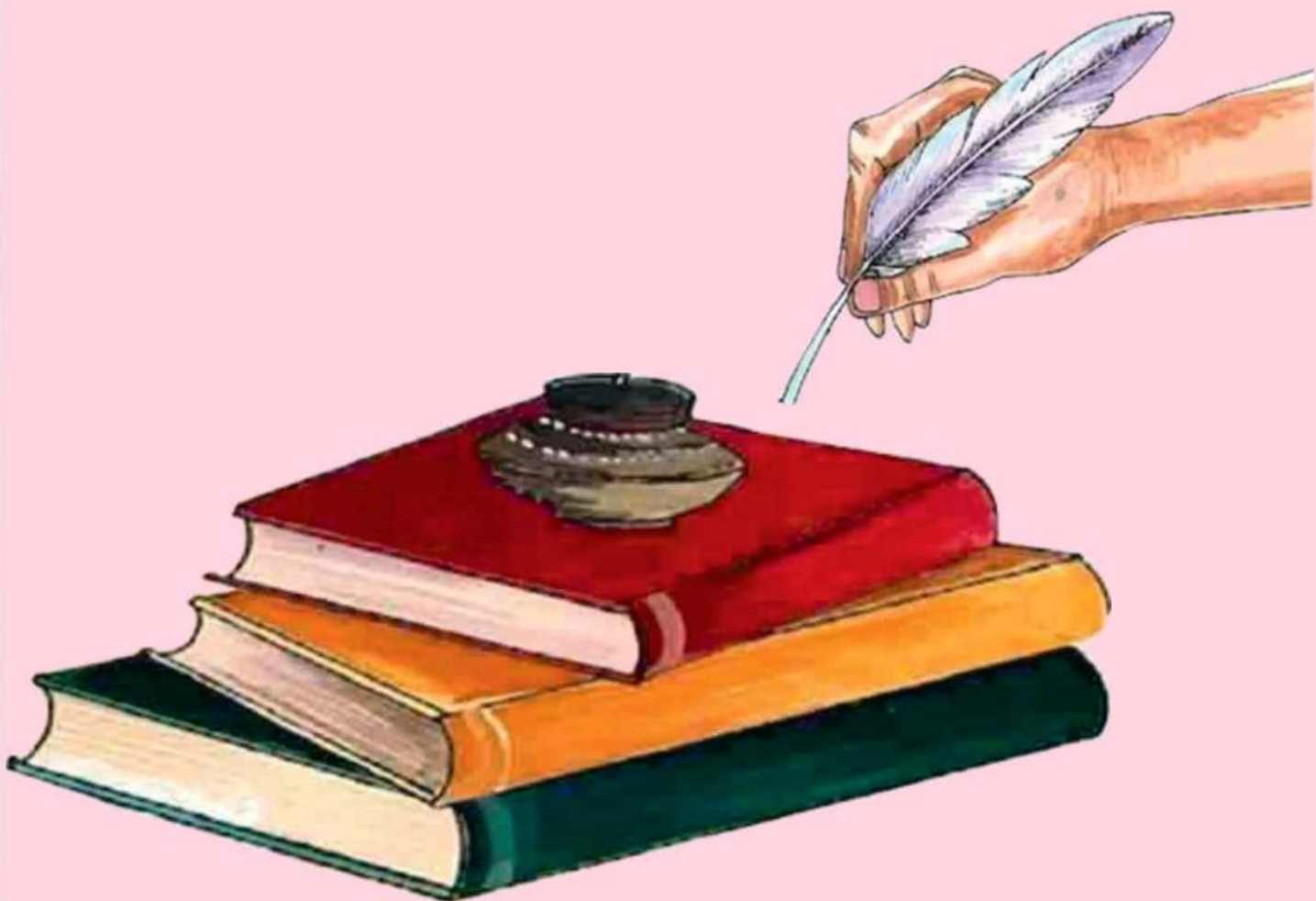
श्याम ने विनम्रतापूर्वक नारायण से कहा कि उसे एक प्रसन्न व्यक्ति की कमीज की आवश्यकता है। कृपया करके मुझे अपनी कमीज दे दें। यह सुनकर नारायण हँसने लगा और बोला श्रीमान मेरे पास कोई कमीज नहीं है मेरे पास केवल एक धोती और गमछा ही है इसके अलावा मेरे पास कोई भी वस्त्र नहीं है। नारायण के उत्तर को सुनकर श्याम अवाक रह गया। वह वहाँ से लौट आया और उसने घर आकर इस बारे में सूचना शिवम चौहान को दी। शिवम तुरंत ही तैयार होकर अपने काफिले के साथ नारायण से मिलने चल पड़ा। नारायण के पास पहुँचकर शिवम चौहान ने अपनी समस्या बताई कि वह चाहकर भी खुश नहीं रह पता है। तुम तो हमेशा खुश रहते हो, कृपया मेरी समस्या का समाधान करो। नारायण ने शिवम कि किसी भी प्रकार की सहायता करने से इंकार कर दिया।

अगले दिन शिवम पुनः नारायण के पास गया लेकिन निराशा ही हाथ लगी। कई दिनों के बाद एक दिन शिवम चुपचाप नारायण से मिलने गया उस वक्त नारायण विश्राम कर रहा था। शिवम ने नारायण को विनम्रतापूर्वक प्रणाम करने के बाद उससे सहायता मांगी। नारायण ने कहा कि आप यही जानना चाहते हो कि आप सुखी कैसे रह सकते हैं? प्रसन्न कैसे रह सकते हैं? शिवम ने अपना सर हाँ में हिलाया।

नारायण ने कहा मेरी माता की मृत्यु जब मैं दस वर्ष का था तभी हो गई थी। वे किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थीं, न तो वे ठीक से खा पाती थीं न ही सो पाती थीं। वे बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं थीं, बस पीड़ा के कारण करहाती रहती थीं। उनकी बीमारी ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि आखिर उनके साथ ऐसा क्यों हुआ? अपने युवावस्था के प्रारंभिक दिनों से ही मैंने यह जानने की कोशिश की, कि जीवन में खुश कैसे रहा जाए? अपने बाकी मित्रों की तरह मैंने कुछ व्यवसाय या नौकरी आदि नहीं की केवल अनेक बुद्धिमान पुरुषों के पास जाकर अपने प्रश्नों का उत्तर ढूँढता रहा और आखिरकार मुझे मेरे प्रश्नों के उत्तर मिल गए, वो मैं तुम्हें बताता हूँ।

नारायण ने कहा कि जब तुम मुझसे इससे पहले मिलने आये थे तब तुम अपने धन एवं ऐश्वर्य के कारण अहंकार में चूर थे तब मैं तुम्हे कुछ भी समझाता तुम नहीं समझ पाते क्योंकि शिक्षा प्राप्त करने के लिए विनम्रता आवश्यक है अब तुम अकेले आये हो वो भी पूर्ण विनम्रता एवं उत्तर प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा के साथ।

किसी प्रसन्न व्यक्ति की कमीज ढूँढने का अर्थ है कि जो सभी प्रकार की प्रसन्नता के स्रोत हैं उन ईश्वर की शरण ग्रहण करना जिसका मार्ग मैंने तुम्हे बता दिया है। शिवम प्रसन्न चित्त के साथ अपने घर लौट आया और उसने अपना बाकी का जीवन नारायण के बताए मार्ग के अनुसार बिताया। बिताता भी कैसे ना, उसे प्रसन्नता की कमीज जो मिल गई थी।





राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चे होते भगवान का रूप

देखकर जिसकी एक मुस्कान,
दूर होती तन-मन की थकान,
पीछे जिसके सारा जहान,
जिन्दगी को देते एक नई पहचान!

कभी हंसते कभी हंसाते,
कभी तो सारी रात जगाते,
रोते हुए भी चुप हो जाते,
मां का स्नेह स्पर्श जो पाते!

बच्चे होते घर की शान,
बिना इनके घर लगे वीरान,
कितनी मीठी इनकी बोली,
हर शब्द जैसे मिश्री घोली।

बच्चों की हर बात निराली,
इनसे ही सारी खुशहाली,
देखते हम जिसका स्वरूप,
बच्चे होते भगवान का रूप!



मेघा कौशिक
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

करुणा

“प्रेम और करुणा आवश्यकता है, विलासिता नहीं, उनके बिना मानवता जीवित नहीं रह सकती है”- दलाई लामा। मानव जीवन में हम पाते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ संस्कार लेकर पैदा होता है, जो अनुमानतः पूर्वजन्म में उसके द्वारा किये गए कृत्यों के कर्म से संचित होते हैं। कुछ बच्चे जन्म से ही दयालु होते हैं और किसी की पीड़ा को स्वभावतः ही महसूस कर लेते हैं और कुछ व्यक्ति परपीड़ा में आनन्द लेते हैं तो एक तीसरा वर्ग होता है जो विस्प्रध होता है।

अध्यात्म, विपासना, रेकी, प्राणिक हीलिंग सबमें कहीं न कहीं परोपकार की वृत्ति काम करती है। जैसे-जैसे व्यक्ति भक्ति, ज्ञान या वैराग्य की ओर अग्रसर होता है, वैसे-वैसे उसमें जीवन-जगत के प्रति नैसर्गिक करुणा का भाव उत्पन्न होता है। बाईबल में यह मूल स्वर्णिम नियम इंगित है “हर चीज़ में दूसरों के साथ वैसा ही करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करे। यह एक मौलिक नैतिक सिद्धांत है जिसे हमें अपने बच्चों को विद्यालयों में सिखाना चाहिए। करुणा अगर हम अपने जीवन में अपना लें तो हमारे घर, कार्यालय, व्यापार, राजनीति सब स्थानों पर प्रेममय और सौहार्द का वातावरण रहेगा और हमारी कार्यक्षमता और कार्य-निष्पादन में आमूल-चूल बढ़ोत्तरी होगी। आध्यात्मिक जगत में करुणा के बिना किसी साधक का उत्थान असंभव है। कण-कण में भगवान का शाब्दिक अर्थ है ही, उसका प्रतीकात्मक अर्थ भी है। हमें हर जीव को अपना प्रारूप मानना चाहिए और उसमें स्वदर्शन करने की कोशिश करनी चाहिए। इसको करने से हममें सहानुभूति के साथ-साथ आत्मिक शान्ति की अनुभूति होती है।

करुणा एक गुण है कमजोरी नहीं, और इसका प्रयोग करने वालों की भावनात्मक बौद्धिकता उच्चतम स्तर पर होती है। जीवन में सभी स्थलों पर करुणा के साथ काम करने से उत्कृष्ट नतीजे निकलते हैं, चाहे वह आपसी सामंजस्य हो, सौहार्दपूर्ण वातावरण की उत्पत्ति हो, बच्चों की परवरिश हो या उनके निर्णयों में सलाह देना और उनकी स्वीकार्यता या कार्यालय में टीम संचार हो, आदि। नतीजतन करुणा और दया की प्रवृत्तियों का होना, उन्हें अपनाना और उनको प्रशिक्षण देना हमारे भविष्य और भावी पीढ़ियों के लिए अत्यावश्यक है। यह भविष्य की सॉफ्ट स्किल है।



अमित कुमार
लेखापरीक्षक

सबसे प्यारा मेरा भारत, आगे बढ़ता मेरा भारत

सबसे प्यारा मेरा भारत
आगे बढ़ता मेरा भारत ॥
सबसे पुराना इतिहास यहाँ है
सबको स्वयं की समझ यहाँ है
शिक्षा लेकर आगे बढ़ना
सभी में गुणों के मोती भरना
नये आसमान में नई उड़ाने
रोज-रोज है भरता भारत
सबसे प्यारा मेरा भारत
आगे बढ़ता मेरा भारत ॥

नई-नई तकनीकें आई
देश में नई उम्मीदें लाई
रोजगार के नये अवसर आये
हर युवा नौकरी पाए
हर क्षेत्र, हर व्यवसाय में
तरक्की करता मेरा भारत
सबसे प्यारा मेरा भारत
आगे बढ़ता मेरा भारत ॥

भारत की जनता है न्यायी
सभी उठाते जिम्मेदारी
रिश्तों को अपनाते हैं

दायित्व सभी निभाते हैं
नई उमंग नये जोश में
करता नई रोशनी भारत
सबसे प्यारा मेरा भारत
आगे बढ़ता मेरा भारत ॥

दर्द किसी को होता है तो
दर्द सभी बांटते हैं
हर त्योहार हर अवसर पर
मिलकर सभी नाचते हैं
कष्ट जब भी आता है
वो सबका बन जाता है
कष्टों के समय में भी
नई मुस्कान बिखेरता भारत
सबसे प्यारा मेरा भारत
आगे बढ़ता मेरा भारत ॥

नैतिक मूल्यों को समझेंगे जब
वास्तव में आगे बढ़ेंगे तब
भुखमरी, चोरी, बेईमानी
आपस में नई-नई खींचातानी
इन सबसे निपटने के लिए
प्रयास रोज करता भारत
इन्हीं प्रयासों से, आगे बढ़ता मेरा भारत
सबसे प्यारा मेरा भारत ॥



राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अमरनाथ जी की यात्रा

नमस्कार साथियों! इस लेख के माध्यम से मैं एक ऐसी यात्रा का अनुभव आपके साथ साझा कर रहा हूँ जिसका अनुभव काफी रोमांचक है एवं धार्मिक रूप से इस यात्रा का विशेष महत्व है। यह अनुभव श्री अमरनाथ जी यात्रा का है। वैसे तो मैंने कई जगहों की यात्राएँ की हैं जैसे अंडमान निकोबार द्वीपसमूह, गोवा, शिमला, नैनीताल आदि लेकिन इतना आनंद एवं रोमांच किसी भी यात्रा में नहीं आया। इस यात्रा को खास बनाते हैं यहाँ के सुनहरे मौसम, हरे-भरे खूबसूरत पेड़-पौधे, सुंदर पहाड़ियाँ, पहाड़ियों से निकलने वाले नदी-झरने, ग्लेशियर एवं लाखों खूबसूरत दृश्य जो पूरी यात्रा के दौरान दिखाई देते हैं।

यह यात्रा हर साल करीब दो माह के लिए शुरू होती है जिसमें सावन माह भी शामिल होता है। इस यात्रा को प्रारम्भ करने से पहले कुछ प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें यात्री की चिकित्सा जांच, यात्री का पंजीकरण, यात्रा परमिट आदि शामिल हैं। इस यात्रा से संबंधित सारी जानकारीयां श्री अमरनाथ जी श्राइन बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है। यदि आप कभी भी इस यात्रा पर जाने की योजना बनाएं तो कोशिश यही करें कि उपरोक्त सारी प्रक्रियाएं यात्रा की तारीख से एक माह पूर्व कर लें क्योंकि इस यात्रा में प्रत्येक दिन सीमित श्रद्धालुओं को ही अनुमति दी जाती है तथा श्रद्धालुओं की संख्या काफी अधिक होती है। इस यात्रा में यात्रियों के लिए जगह-जगह पर खाने-पीने, ठहरने, सोने के लिए गद्दा रजाई, गरम पानी आदि निःशुल्क उपलब्ध होते हैं।

इस यात्रा की शुरुआत हम दिल्ली से करते हैं जहाँ से हवाईजहाज से श्रीनगर पहुंचते हैं। श्रीनगर से बालटाल की करीब 100 किलोमीटर की यात्रा हमें बस से करनी थी लेकिन फ्लाइट लेट होने की वजह से आखिरी बस जो करीब 1 बजे दोपहर की थी छूट गई। श्रीनगर से बालटाल बेस कैंप तक के लिए हमने इन्नोवा टैक्सी 4500 रूपए में बुक की और जम्मू-कश्मीर की खूबसूरत वादियों का आनंद लेते हुए करीब 4 घंटे की यात्रा के बाद हम बालटाल बेस कैंप पहुंच गए जो खूबसूरत पहाड़ियों के बीच सिंध नदी के किनारे पर स्थित है।



बालटाल बेस कैप की कुछ तस्वीरें

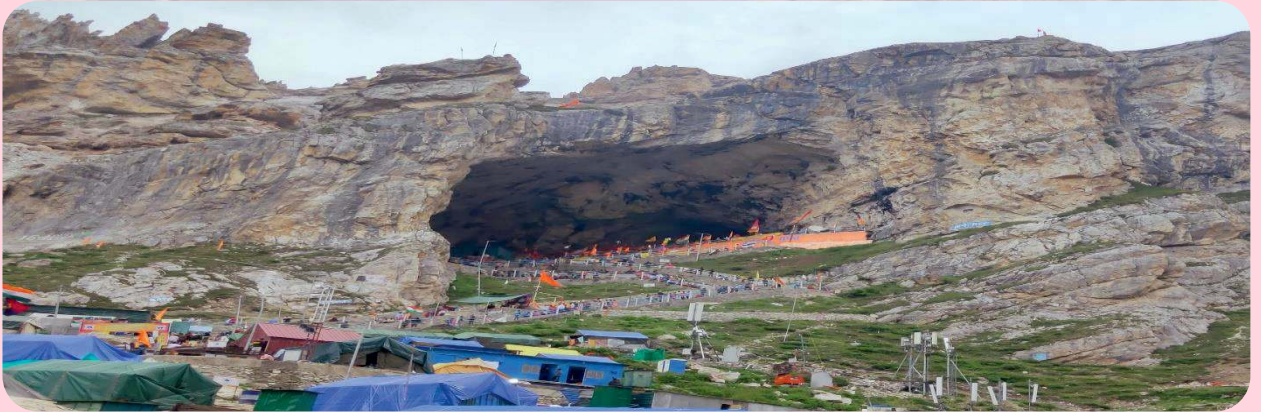
श्री अमरनाथ जी की यात्रा मुख्यतः दो मार्गों से की जाती है जिसमें पहला मार्ग पहलगांव से एवं दूसरा मार्ग बालटाल से शुरू होता है। इस यात्रा का पहलगांव मार्ग परंपरागत मार्ग है जिसमें 40-45 किलोमीटर की यात्रा करनी होती है जो चंदनवाड़ी, जोजीबल, नागाकोटी, शेषनाग, महागणेश टॉप, एवं पंचतरणी जैसे विशेष स्थानों से होकर जाती है। बालटाल मार्ग से लगभग 15 किलोमीटर की यात्रा करनी होती है जो मुख्यतः डोमेल एवं बुरारी स्थानों से होकर जाती है।

हमने बालटाल से पंचतरणी तक की यात्रा हेलीकॉप्टर से की जो 15-20 मिनट की थी। यह दो पहाड़ियों के बीच से एवं सिंधु नदी के ऊपर से होकर जाती है जहाँ बहुत ही खूबसूरत दृश्य दिखाए देते हैं। हेलीकॉप्टर सेवा दोनों ही मार्गों पहलगाम एवं बालटाल से उपलब्ध है। हेलीकॉप्टर सेवा पंचतरणी तक ही उपलब्ध होती है एवं यहां से पवित्र गुफा की दूरी लगभग 5 किलोमीटर है।



हेलीकॉप्टर से ली गई कुछ तस्वीरें

पंचतरणी से आगे की यात्रा हमने पैदल ट्रैक करके की जो काफी दुर्गम पहाड़ियों के बीच से होकर गुज़रती है जहाँ बहुत सारे झरने दिखाई देते हैं। लगभग 3 घंटे की यात्रा के बाद हम पवित्र गुफा के पास पहुँच गए। श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा बर्फ के शिवलिंग के दर्शन कर हम सब नीचे कैम्प में आ गए। हमारी यह योजना थी कि दर्शन करने के बाद रात को गुफा के परिसर वाले बेस कैम्प में रुकेंगे लेकिन मौसम खराब होने की वजह से वहाँ किसी को भी रुकने की अनुमति नहीं थी। करीब 4 बजे शाम को हम पवित्र गुफा से वापस बालटाल की यात्रा पैदल ट्रैक करते हुए निकल गए एवं लगभग 7 घण्टे की यात्रा के बाद हम आखिरकार बालटाल बेस कैम्प पहुँच गए।



श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा

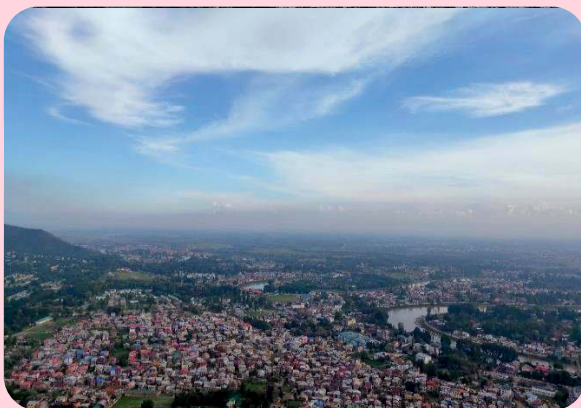
बालटाल बेस कैम्प में एक दिन रुकने के बाद अगले दिन हम सोनमर्ग की यात्रा के लिए निकल पड़े। बालटाल बेस कैम्प से सोनमर्ग की दूरी लगभग 15 किलोमीटर है जिसके लिए हमने टैक्सी ली और 30-40 मिनट की यात्रा के बाद सोनमर्ग वैली के पास पहुँच गए। मुख्य मार्ग से सोनमर्ग वैली की दूरी लगभग 2 किलोमीटर है जिसके लिए या तो पैदल या फिर घोड़े से यात्रा करना होता है। हम घोड़े की यात्रा करते हुए सोनमर्ग वैली की तरफ निकल पड़े जो बहुत ही सुंदर हरी-भरी पहाड़ी एवं झीलों के बीच से होकर गुजरता है। लगभग 25 मिनट के बाद हम सोनमर्ग वैली पहुँच गए जहाँ हमने इसकी खूबसूरती देखी। सोनमर्ग से एक ग्लेशियर भी

दिखाई देता है जो बहुत ही विशाल है एवं सोनमर्ग की खूबसूरती को चार चांद लगाता है। जम्मू एवं कश्मीर में जितनी भी घूमने की मशहूर जगहें हैं उनमें से सोनमर्ग काफी खूबसूरत जगह है।



सोनमर्ग वैली की कुछ तस्वीरें

यात्रा के अगले क्रम में हम श्रीनगर स्थित श्री शंकराचार्य मंदिर के लिए निकल गए। यह प्राचीन मन्दिर शंकराचार्य पर्वत पर स्थित है। यह एक शिवमंदिर है जो केवल पत्थरों से निर्मित है। शंकराचार्य मंदिर पहाड़ी के शिखर पर स्थित है जहाँ से पूरा श्रीनगर शहर दिखाई देता है। इस मंदिर के चारों तरफ बहुत ही खूबसूरत दृश्य भी देखने को मिलता है।



श्री शंकराचार्य मंदिर से ली गई श्रीनगर शहर की कुछ तस्वीरें,,

शाम को श्रीनगर की मशहूर डल झील में शिकारा राइड का आनंद लेने के बाद अगले दिन की फ्लाईट से हम पस दिल्ली लौट आए और इस प्रकार एक सुखद एवं यादगार यात्रा का अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

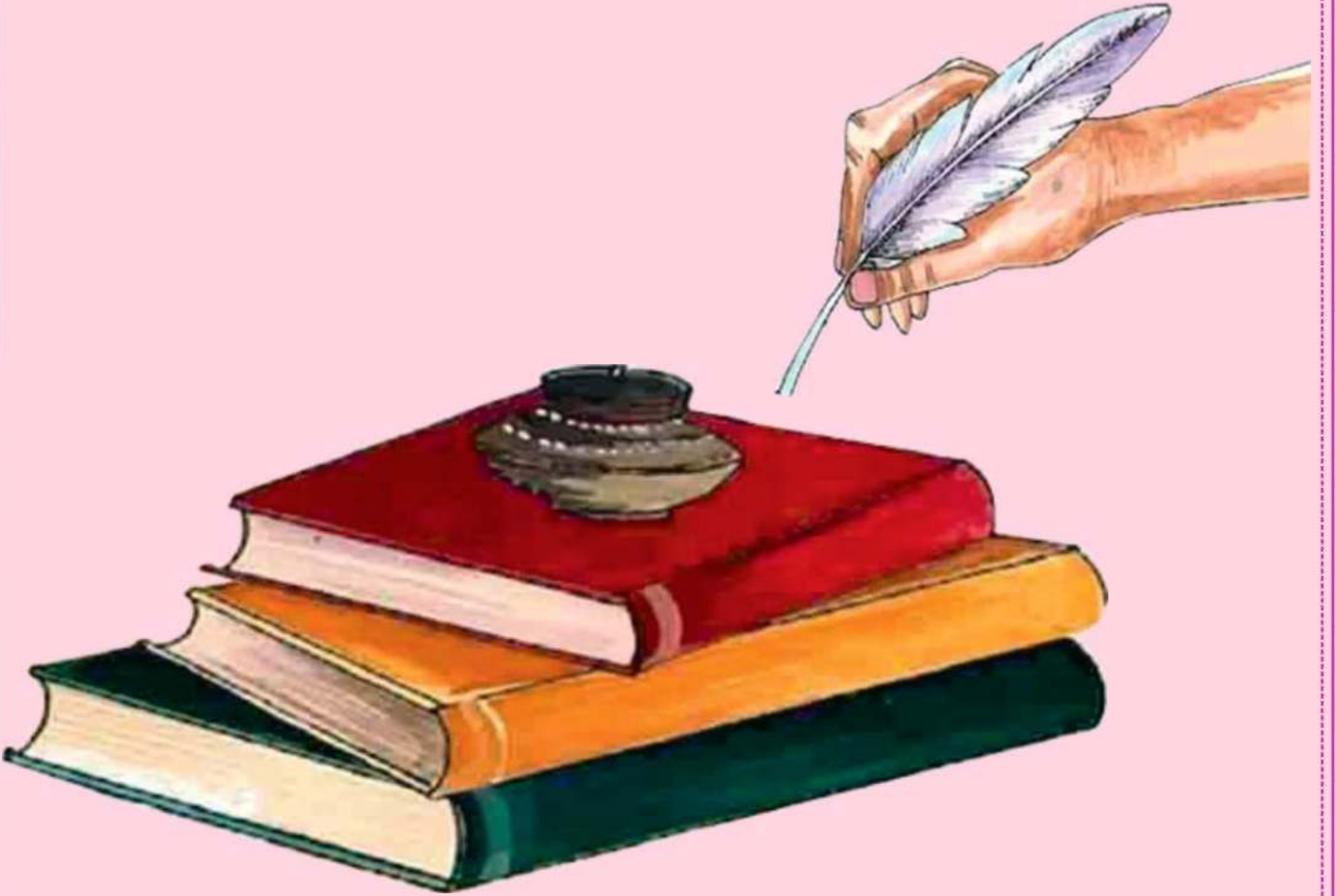


नवीन
लेखापरीक्षक

वो जो सबके अंदर रहता है

ढूँढा अपने अंदर मैंने
ढूँढा अपने हर पथ-पथ तक
तू मेरे अंदर रहता है,
आएगी खबर ये कब मुझ तक?
सुबह मंदिर में बजने वाली
पहली घंटी की हर धुन तक
विरह की पतझड़ से लेकर
खिलती कलियों के फ़ागुन तक
छिछले पानी के साहिल से
गहरे सागर के तल-तल तक
अब बरसों क्या और महीनों क्या
अपने बीते हर पल-पल तक
बस यहाँ-वहाँ तो ढूँढ लिया
तुझको मैंने हर पथ-पथ तक
तू मेरे अंदर रहता है
आएगी खबर ये कब मुझ तक?
अपनों से मिलते हर बल से
अपनों से मिलते छल-छल तक
खामोशी में पलती आहों से
पायल में होती छन-छन तक
पौधों में आते फूलों से

पेड़ों में आते फल-फल तक
जो बीत गए बस आस में और
आने वाले हर कल-कल तक
बस यहाँ-वहाँ तो ढूँढ लिया
तुझको मैंने हर पथ-पथ तक
तू मेरे अंदर रहता है
आएगी खबर ये कब मुझ तक?





गुंजन जाजोरिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी दुबई यात्रा

दुबई दुनिया के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। एक बेहतरीन यात्रा अनुभव के लिए यहाँ शानदार वास्तुकला, शॉपिंग फेस्टिवल, अद्भुत होटल, विशाल शॉपिंग मॉल, ऊँची-ऊँची इमारतें और बढ़िया भोजन उपलब्ध है। भारत से इसकी निकटता भी इसे, भारतीयों के लिए अवश्य घूमने योग्य स्थल बनाती है। हालांकि, दुबई भारत की तुलना में थोड़ा महंगा है, फिर भी यूरोप, ब्रिटेन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड की तुलना में यह जेब पर उतना भारी नहीं पड़ता है। जितना अधिक दूरी पर देश, उतना अधिक हवाई टिकट की कीमत जो किसी भी विदेश यात्रा के खर्च का बड़ा हिस्सा बनती है।

मैं दिसंबर, 2023 के दौरान अपने परिवार के साथ दुबई गया, इस उम्मीद से कि वहाँ नया साल मनाऊंगा। दिसंबर-जनवरी के दौरान दुबई का मौसम सबसे सुहावना होता है। दिन भर ठंडी हवा महसूस होती है, जो रात में और ठंडी हो जाती है। शाम के समय किसी को हल्की जैकेट या स्टोल पहनने की ज़रूरत हो सकती है।

अप्रवासन, सुरक्षा जांच, बोर्डिंग, डी-प्लेनिंग और बहुत लम्बे इंतजार जैसी हवाईअड्डे की परेशानियों से काफी थक जाने के बाद, हम आखिरकार लगभग रात के समय दुबई पहुंचे। आधी रात को अपने होटल पहुँचे और तुरंत झपकी आ गई।

हमने यात्रा के लिए लगभग 14 दिनों का यात्रा कार्यक्रम बनाया था। अगली सुबह, हम 'काइट बीच' पर गए। कितना साफ़ सुथरा समुद्र तट था वह। साफ़ नीला पानी और बिल्कुल साफ़ रेत। मौसम भी साफ़ था और ठंडी हवाएं चल रही थी। हमारे साथ 3 बच्चे भी थे, जो रेत में गेंद के साथ खेल रहे थे। हमने समुद्र के किनारे नाश्ता किया और समुद्र तट पर घूमे। जिस बात ने मुझे चकित कर दिया वह थी वहाँ के लोगों की स्वतंत्रता। बुर्का पहने महिलाओं को अपने परिवार के साथ समुद्र तट का आनंद लेते देखा जा सकता है एवं पश्चिमी संस्कृति के लोग, जो समुद्र तट पर तैराकी वस्त्र पसंद करते हैं। हालाँकि दुबई में कोई आधिकारिक ड्रेस कोड नहीं है, लेकिन लोगों को स्थानीय जनता का सम्मान करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्रों में उचित कपड़े पहनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

दोपहर के समय हम डॉल्फिनैरियम गए, जोकि 'बर दुबई' के चिल्ड्रन सिटी के पास क्रीक पार्क में स्थित है। यह लगभग 45 मिनट का शो है और उनके पास सील और डॉल्फिन हैं, जो सभी कलाबाजियाँ करते हैं। वैसे तो यह शो सभी युवाओं के लिए है लेकिन यह निश्चित रूप से सभी आयु समूहों को पसंद आता है। हम शाम के समय मरीना समुद्र तट पर टहले और 'जू-जू'-एक तुर्की और लेबनानी फ्र्यूज़न रेस्तरां में रात का खाना खाया।

हमारी सूची में अगला स्थान 'सूक मदीनत, जुमेराह' था, जो एक शॉपिंग और डाइनिंग गंतव्य है जो 7 सितारा होटल, प्रतिष्ठित 'बुर्ज-अल-अरब' के करीब स्थित है। यह बाज़ार नए-पुराने और एक प्रामाणिक अरबी बाज़ार का आदर्श मिश्रण है। इस सुरम्य समुद्र तटीय शॉपिंग कॉम्प्लेक्स को दुबई के "लिटिल वेनिस" के रूप में भी जाना जाता है।

बाद में हम 'एक्सपो सिटी', एक टिकाऊ, तकनीक-सक्षम, मानव-केंद्रित, भविष्य के शहर गए। एक्सपो शहर में प्रवेश निःशुल्क है, लेकिन वहां के विभिन्न मंडपों को देखने के लिए आपको भुगतान करना होता है। जगह बहुत बड़ी है और इसे पूरा देखने में 3-4 घंटे लग सकते हैं। हमने अपनी रुचि के अनुसार कुछ मंडपों का चयन किया और उन स्थानों का आनंद लिया। एक्सपो सिटी में 'अवास्तविक' जल सुविधा अवश्य देखी जानी चाहिए। हमने अपना दिन 'अल- अब्दुल्लाह' में रात्रि-भोज के साथ समाप्त किया, जो फिर से सबसे स्वादिष्ट व्यंजनों वाला एक लेबनानी रेस्तरां है।

अगले दिन दुबई सफ़ारी पार्क जाना था। यह स्थान सभी प्रकृति प्रेमियों के लिए अद्भुत है। इस पार्क में सभी खूंखार जानवर हैं और इन्हें सफ़ारी बस में बैठकर बहुत करीब से देखा जा सकता है। इस स्थान में पूरा दिन लग सकता है क्योंकि पूरे दिन में कई शो होते हैं और शो देखने के लिए प्रत्येक स्थान पर समय पर पहुंचना पड़ता है। दुबई की यह एक ऐसी जगह है जिसे ज़रूर देखना चाहिए।

अगले दिन का बहुत इंतज़ार था। हमने दुबई की प्रसिद्ध 'डेजर्ट सफ़ारी' देखने की योजना बनाई थी। यह स्थान दुबई शहर से थोड़ा दूर है। हम शाम के समय पर पहुंचे, जब रेत ठंडी होने लगती है। सबसे पहले, हमें रेत के टीलों की आनंदमय सवारी का अनुभव करना था। यात्रा बेहद रोमांचक थी और हमने खूब मज़ा किया। यह केवल 15 मिनट तक चला लेकिन हमने इसके हर हिस्से का आनंद लिया। फिर हमें रेगिस्तान में हमारे शिविर में ले जाया गया। सूरज ढल रहा था और अपनी पीली-नारंगी छटा बिखेर रहा था। रेत हमारे पैरों पर ठंडी महसूस हुई। हम सभी ने रेत में नंगे पैर चलना तय किया और यह बहुत आरामदायक लगा। कुछ खूबसूरत महिलाओं और ऊर्जावान पुरुषों द्वारा नृत्य प्रदर्शन किया गया, जिन्होंने आग से भी खेला और अपने विशेषज्ञ मनोरंजक कौशल दिखाए। वह रात बिल्कुल अद्भुत थी। दुबई में किसी को भी रेगिस्तानी सफ़ारी की यात्रा करना कभी नहीं भूलना चाहिए।

अगले दिन हम 'मिरेकल गार्डन' आये। जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, यह जगह वाकई एक चमत्कार है। लाखों फूलों को इतने अद्भुत तरीके से सजाया गया है कि किसी को भी आश्चर्य होगा कि यह उपलब्धि कैसे हासिल की गई होगी। यहाँ के हर नुक्कड़ पर डिज़्नी के कार्टूनों की विशाल मूर्तियाँ लगी हुई हैं। यह इतना फोटोजेनिक है कि कोई भी हर स्टॉप पर एक दर्जन तस्वीरें क्लिक किए बिना रुक नहीं सकता है।

ढेर सारे भोजनालय, इत्र की दुकानें, आइस्क्रीम पार्लर माहौल को और भी मनोरंजक बनाते हैं। बच्चों को यह जगह बहुत पसंद आई और बड़ों को भी। एक सलाह यह है कि घूमने के लिए अच्छे जूते पहनें क्योंकि बहुत चलना पड़ता है।

हमारा शेड्यूल नॉन-स्टॉप यात्रा से भरा हुआ था। ऐसा लग रहा था कि यात्रा के नियोजित दो सप्ताह अभी भी कम हैं जैसा कि अन्यथा कल्पना की गई थी। पर्यटन स्थलों के मामले में दुबई का विस्तार हो रहा है। और उनमें से लगभग हर जगह घूमने में पूरा दिन ले सकती है। इसलिए जो कोई भी दुबई जाना चाहता है और उस जगह का पूरी तरह से पता लगाना चाहता है, उसे व्यापक शोध करना होगा या किसी विशेषज्ञ से यात्रा कार्यक्रम की योजना बनानी होगी।

अगली यात्रा दुबई 'ग्लोबल विलेज' की थी। यह जगह बहुत बड़ी है और यहाँ दुनिया भर के देशों के काउंटर हैं। यह हर साल दिल्ली में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले की तरह है, लेकिन कहीं बेहतर और अधिक मनोरंजक। इस स्थान पर जाने का आदर्श समय शाम का समय है। आपके चेहरे पर ठंडी हवा आपको हर समय जीवंत महसूस कराती है। ऐसे कई स्टेज शो हैं, जैसे बॉलीवुड डांस शो, मार्शल आर्ट डिस्प्ले, सिंगिंग शो आदि, जिनका आनंद लिया जा सकता है, अगर कोई शो के समय का ठीक से पालन करे। कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थान पर बैठ सकता है, क्योंकि यहां कोई निश्चित सीटें नहीं हैं, लेकिन यदि आप आगे की पंक्तियों में बैठना चाहते हैं, तो आपको जितनी जल्दी हो सके सीटें लेनी होंगी।

हमने मध्यपूर्वी स्टालों और विशेष रूप से उनके भोजन का सबसे अधिक आनंद लिया। हमने विभिन्न प्रकार के शहद, मसाले, पारंपरिक पोशाकें, लोकनृत्य और विभिन्न प्रकार की अन्य वस्तुएँ देखीं। हमने अपनी पसंद की हर चीज की खरीदारी की, पेट भरने तक खाया और देर रात करीब 2.30 बजे होटल वापस लौट आए और फिर भी, हम गाँव के आधे हिस्से से चूक गए। कुल मिलाकर, वह एक मौज-मस्ती भरा दिन था।

अगले दिन के लिए, हम दूसरे अमीरात के लिए रवाना हुए, जिसे 'रास-अल-खैमा' के नाम से जाना जाता है, जो संयुक्त अरब अमीरात के सात अमीरातों में से एक है। हम संयुक्त अरब अमीरात के सबसे ऊँचे स्थान 'जेबेल जैस' पर्वत पर जा रहे थे। हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस स्थान पर ठंड महसूस हो रही थी और हमें हल्की जैकेट/स्टोल पहननी पड़ी क्योंकि हवाएँ ठंडी लग रही थीं। बादल लगभग हमारे कदमों के करीब थे और जगह बेहतरीन लग रही थी। पहाड़ियाँ बहुत सुन्दर और सुरम्य थीं। हमने 'जेबेल जैस' पर्वत पर दुनिया की सबसे लंबी ज़िपलाइन भी देखी। इसे 'जैस फ़्लाइट' कहा जाता है। यह 2.84 किलोमीटर की दुनिया की सबसे लंबी ज़िपलाइन है। 160 किमी प्रति घंटे की रोंगटे खड़े कर देने वाली गति से टेढ़ी-मेढ़ी पर्वत चोटियों के बीच से गुजरते, अरब की खाड़ी से 1680 मीटर ऊपर, तीन मिनट का 'एड्रेनालाईन-रश' साहसिक कार्य आपको जीवन में एक बार सुपरहीरो की भावना से भर देगा।

लगातार यात्रा करने के कारण अगले दिन हमने थोड़ा आराम किया। हमने 'मरीना बे क्रूज' के साथ एक आरामदायक शाम की योजना बनाई थी। हमारा जहाज, दुल्हन के गहनों की तरह सजी, बहु-रोशनी

वाली इमारतों के सामने से गुजरते हुए, अरब सागर में धीमे-धीमे आगे बढ़ा। ठंडी हवा, सुखदायक संगीत और शीर्ष डेक पर नृत्य प्रदर्शन ने हमारे आनंदमय मूड को और बढ़ा दिया।

आखिरी कुछ दिन काफी खास थे क्योंकि हमें विश्व प्रसिद्ध इमारत 'बुर्ज खलीफा' का दौरा करना था। आज के समय में इसे किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। हम सभी ने इसे तस्वीरों, फिल्मों, सोशल मीडिया आदि में देखा है, लेकिन अपनी आंखों के सामने इस विशाल इमारत को देखना अविस्मरणीय था। यह इतनी विशाल है कि जब आप इसके ठीक नीचे खड़े होकर इसे ऊपर की ओर देखने की कोशिश करेंगे तो ऊपर तक देख पाना मुश्किल होगा। इसके ठीक सामने का फाउंटेन शो शानदार है। पर्यटक 830 मीटर की बुर्ज खलीफा शीर्ष पर, स्तर 124 और स्तर 125 पर अवलोकन डेक पर पहुँच सकते हैं। डेक से दृश्य अद्भुत दिखाई देता है।

दुबई के खजाने में एक और पर्यटन स्थल है 'म्यूज़ीअम ऑफ द फ्यूचर'। यह नवीन और भविष्यवादी विचारधाराओं को समर्पित एक मील का पत्थर है। यह एक टोरस के आकार की इमारत है जिसमें भविष्य के बारे में एक कविता के रूप में खिड़कियाँ हैं, जो संयुक्त अरब अमीरात के उपराष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री तथा दुबई के शासक महामहिम शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मक्तूम द्वारा लिखी गई है।

पर्यटक संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबू धाबी भी जा सकते हैं। सरकार अबू धाबी में बहुत तेजी से पर्यटन स्थल विकसित कर रही है। फेरारी वर्ल्ड, यास द्वीप, क्रसर-अल-वतन, शेख जायद मस्जिद, लौवरे संग्रहालय, अमीरात महल, आदि। हमने 3 स्थानों का दौरा किया, क्योंकि अबू धाबी में हमारे पास केवल एक दिन था। मस्जिद और क्रसर-अल-वतन अवश्य देखने योग्य स्थान हैं। सुंदर और अद्भुत वास्तुकला से निर्मित ये आधुनिक समय के चमत्कार हैं। इन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता कि इन्हें कितना खूबसूरत बनाया गया है। यह इनके अद्भुत सौन्दर्य को देखकर ही महसूस किया जा सकता है।

आखिरी कुछ दिन शॉपिंग में बीते। हमने सोना, खजूर, चॉकलेट, सौंदर्य प्रसाधन, आभूषण, कपड़े, मिठाइयाँ, इलेक्ट्रॉनिक्स और इत्र खरीदे। हमने पुराने दुबई का दौरा किया और ऐसा लगा कि हम दिल्ली के चांदनी चौक आ पहुँचे हैं। वैसे ही गलियारे, चकाचौंध, खाने-पीने की दुकानें और आवाज लगाते हुए बहुत सारे विक्रेता। दुबई में काम करते हुए बहुत से भारतीय और पाकिस्तानी मिल सकते हैं। इसलिए घूमते समय हमेशा थोड़ा सुविधाजनक महसूस होता था।

कुल मिलाकर, दुबई घूमने के लिए एक बेहतरीन जगह है। चाहे इसकी करिश्माई इमारतें हों, सुंदर समुद्र तट हों, वास्तुशिल्प के चमत्कार हों, स्वादिष्ट भोजन हों, गर्मजोशी से भरे लोग हों और सुरक्षा की स्वतंत्रता हो। लेकिन जैसा कि कहते हैं, सभी अच्छी चीजें आती हैं और समाप्त हो जाती हैं, दुबई की हमारी यात्रा भी समाप्त हो गई थी। ढेर सारी यादों और भरे हुए सूटकेस के साथ, हमने भारत वापस आने के लिए अपनी उड़ान भरी, और अपने दिल में यह वादा किया कि जब भी संभव हो, एक बार फिर से दुबई की सभी जगहों का दौरा करेंगे।

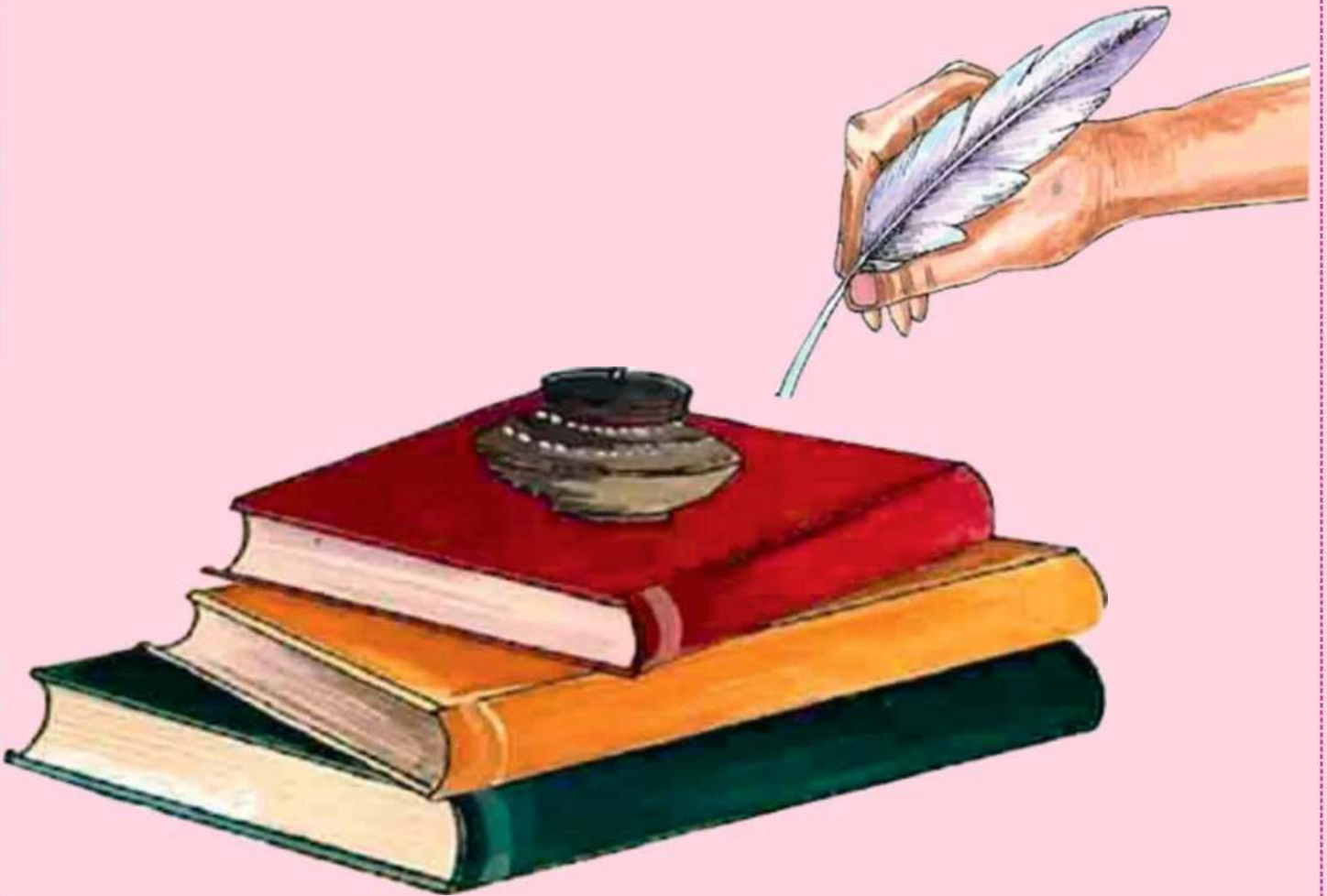


मनोज वत्स
लेखापरीक्षक

नमन भारत के वीर शहीदों को

सौ बार नमन मैं करता हूँ
हर बार नमन मैं करता हूँ
भारत के वीर शहीदों को
धन्य है उनकी जवानी
जो काम देश के है आई।
है नमन मेरा उन माँओं को
जिन्होंने अपने लाल खोए हैं
खोकर चिराग़ अपने घर का
जो खून के आँसू रोई हैं।
जो जी भर के रो भी न सका
जो कतरा-कतरा मरता है
धन्य है पिता वीर शहीदों का
जो रोज़ जी-जी मरता है।
क्या बीती होगी उन बहनों पर
जिन्होंने अपने भाई खोए हैं
राखी वाले शुभ दिन पर जो
फूट-फूट कर रोई हैं।
सौ बार नमन उन विश्ववाओं को
जिन्होंने अपना सब-कुछ खोया है
जब मेहंदी वाले हाथों ने
स्वयं माथे का सिन्दूर धोया है।
है नमन उन मासूमों को
जिन्होंने अपने पिता खोए हैं
देश की आन-बान और रक्षा में

जो अनाथ हुए हैं।
है धन्य वो तिरंगा जो लिपट
गया उन वीर शहीदों पर
सौ बार नमन, सौ बार नमन
मैं करता हूँ भारत के वीर शहीदों को।





मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

हर इंसान खूबसूरत होता है

भगवान की बनाई इस प्रकृति में सबसे खूबसूरत प्राणी इंसान है,
परन्तु लालच और लोभ ने कहीं न कहीं छीन ली उसकी ये पहचान है,
आज विश्व भर में इंसान ही इंसान का दुश्मन बना हुआ है,
कोई धर्म के नाम पर, तो कोई अपनी स्वार्थ पूर्ण नीतियों के नाम पर,
हर कोई एक दूसरे पर अपने वर्चस्व को स्थापित करने में लगा हुआ है,
इस प्रतिस्पर्धा में हम यह ही भूल गये हैं कि हर इंसान खूबसूरत होता है,

इतिहास से लेकर आज भी इंसान स्वयं इंसान से भेदभाव करता है,
आज भी उसकी काबिलियत, शिष्टाचार और संघर्ष कोई नहीं देखना चाहता है,
आज भी होने वाला व्यवहार, नाम, रंग, पहने हुए कपड़ों द्वारा तय किया जाता है,
ऊपर से इंसानों का यह दुर्व्यवहार हर स्तर पर आप कहीं भी देख सकते हैं,
कहीं भगवान के नाम पर, तो कहीं इंसान की जात, बिरादरी के नाम पर,
पर इस भागदौड़ में हम यह भूल गये हैं कि हर इंसान खूबसूरत होता है,

मेरा रंग अगर काला है तो मैं घृणा और गोरा हुआ तो सम्मान का पात्र हूँ,
अगर मैं पुरुष हूँ तो सर्वेसर्वा हूँ और औरत हूँ तो सीमित दायरों में कैद हूँ,
हजारों वर्षों से इंसानों में यह कैसी रीत चली आ रही है? और कब तक?
जब प्रकृति ने किसी में भेदभाव नहीं किया, तो हमारे मध्य यह और कब तक?
क्यों हम दूसरों को भी प्यार के काबिल और अपने समकक्ष नहीं समझ सकते?
समाज में ये ठेकेदारी और कब तक? जबकि हर इंसान खूबसूरत होता है,

कोई गर्मी के अति ताप से, सर्दी में भयंकर नाद से मरे, तो इसमें मुझे क्या?
मेरी वजह से निरीह वन प्राणियों के घर छिनें, प्रकृति बेसहारा बने, तो मुझे क्या?
मेरा भगवान श्रेष्ठ है, दूसरा नहीं, धरती पर हमारा हक है, किसी और का नहीं,
अगर मैं सम्पन्न हूँ, तो प्रदूषण, क्लाइमेट चेंज, प्रकृति से मेरा कोई सरोकार नहीं,
मैं किसी समुदाय विशेष में पैदा हुआ तो सम्माननीय, और कहीं तो प्रार्थनीय,
अब और बस करो यह सब, क्योंकि भगवान का बनाया हर इंसान खूबसूरत होता है।

भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन 2024 की कुछ झलकियाँ

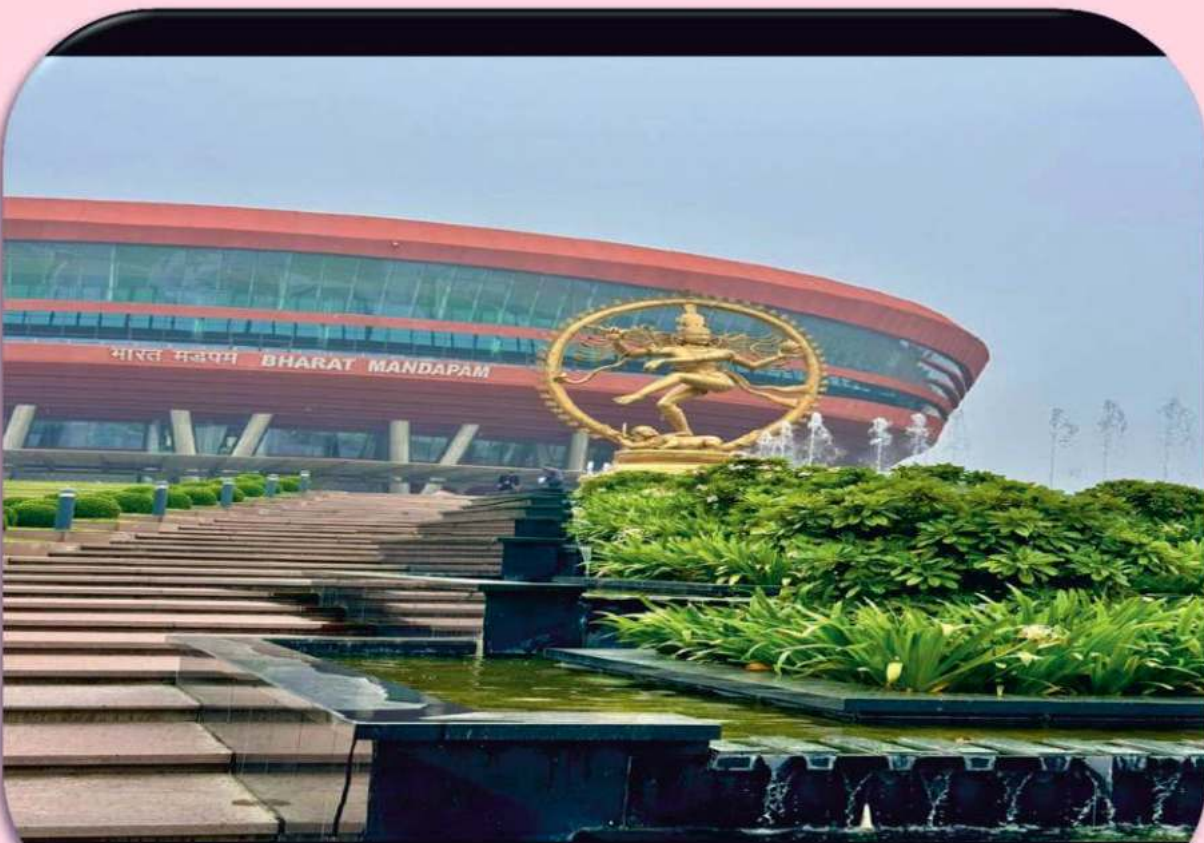


हिंदी दिवस - 2024

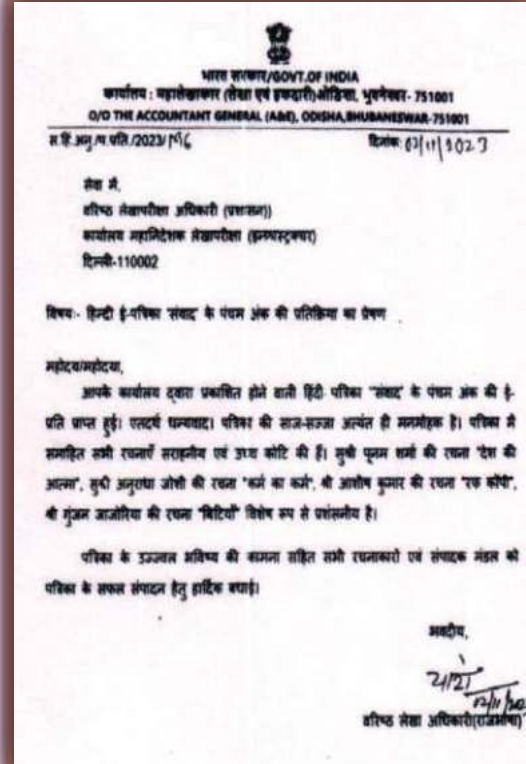
चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा हीरा जयंती वर्ष

भारत मंडपम, दिल्ली
14 व 15 नवंबर 2024



हिंदी पत्रिका संवाद के पंचम अंक के लिए कार्यालय को प्राप्त प्रशंसा पत्र





[illegible]

सं. डि. प्रका/2512/24/24-


संघीय लोकसेवा आयोग
भारत

प्रधान निदेशक रतन - वाणिज्यिक
सेवाधरीका का कार्यालय, बंगलूरु-560001

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE-COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दिनांक - 25/10/2023

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक सेवाधरीका (प्रशासनिक),
ए सिटी, तुलार नगर, आर्.पी. एस्टेट, आर्.पी. ब्लाक,
नई दिल्ली - 110002



विषय:- प्रत्यक्ष पत्र।

महोदय महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई - चौकिसा संवाद की पंथ अंक की प्रति इस
कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। चौकिसा में सम्मिलित सभी राजस्व पद्धति एवं संश्लेषण है।
विभिन्न प्रकार की राजस्वों से सभी प्रकार की चौकिसा कार्यालयों की दिशा में एक स्वीकृत
प्रकाश है। चौकिसा के प्रकाशन के कारण प्रकाश हुई चुकानकरनाएँ।

अप्रकाशित,

अधीनस्थ,
25/10/23
हिन्दी अधिकारी

हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देती सुश्री सतिंदर कौर, पर्यवेक्षक



हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देती सुश्री अनू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक



हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देती डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक



हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देती सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी



कार्यालय के मनोरंजन क्लब की ओर से एक दिवसीय दौरो की कुछ झलकियाँ



मोजोलैंड, सोनीपत



लोहागढ़ फार्म्स, गुडगाँव

नव वर्ष 2024 के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजन के दौरान
उपस्थित कार्यालय के कार्मिक तथा केक काटते हुए महानिदेशक
महोदय श्री राजीव कुमार पाण्डेय



ऋषिकेश दौरे की कुछ तस्वीरें



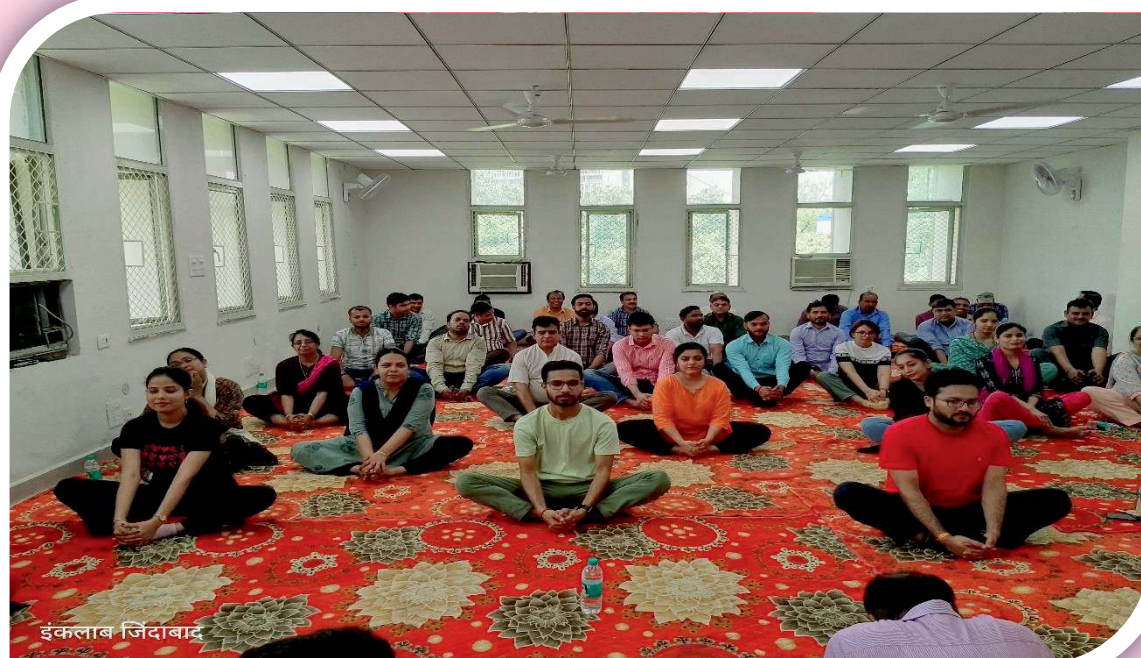
कार्यालय में महिला दिवस 2024 के आयोजन पर एकत्रित महिलाएँ



कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियाँ









‘संवाद’

